* शेठ देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धार फण्ड *

श्री सूरिमन्त्रयन्त्रसाहित्यादि ग्रन्थावलि पुष्प ८-९.

। ॐ अर्हं ह्रीं नमः ।

जैनाचार्य लघुखरतरगच्छालंकारभट्टारक श्रीजिनप्रभसूरीश्वरविरचित—

बृहत् ह्रींकारकल्प विवरणम्

तथा

(वाचक चन्द्रसेनोद्धृत) वर्धमान विद्याकल्पः

संशोधकः—तपोगच्छाधिपति–शासनप्रभावक–व्याख्याता–आचार्य श्रीमद्विजयमोहनसूरीश्वर पट्टधर विद्वान् शिष्य व्याख्यानवाचस्पति अनुयोगाचार्य पंन्यासप्रवर श्री प्रीतिविजय गणिवर.

प्रकाशक—शा० डाह्याभाइ मोहोकमलाल, ठे० पांजरापोळ, अमदावाद.

मूल्यः—अमूल्य, पठनपाठन.
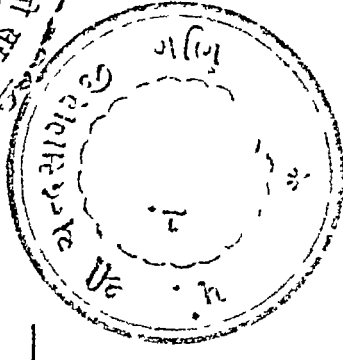
प्रकाशक —
शाह डाह्याभाइ मोहोकमलाल
ठे० पाजरापोल, अमदावाद.

सहायकः—
प्रवर्त्तक मुनिश्री सुभद्रविजयजीना सदुपदेशथी श्री चन्द्रप्रभजिनालय–उपाश्रय(सेन्डहर्स्ट रोड, मुंबइ)ना
कार्यवाहकः—श्रेष्ठिवर्य मंगलदास चिमनलाल झवेरी.

मुद्रक —
शाह गुलाबचंद लल्लुभाइ,
महोदय मुद्रणालय, भावनगर.

प्रस्तावना

जैन धर्मना प्राचीन अर्वाचीन समयमा दरेक विषयना साहित्यमा अनेक ग्रथो लखाया छे. प्राचीन साहित्य जैनागमथी शरू थाय छे ते अने त्यारपछी आज पर्यन्तना ग्रथोमा धर्म–कर्म–क्रिया–विधिविधान–तत्त्ववाद–उपदेश–कथा–चरित्र–इतिहास–भूगोल–निमित्त–शारीरिक वगेरे तथा भाषाविषयक व्याकरण–काव्य–कोश–अलंकार–नाटकादि विषयोनी साथे मंत्र–तंत्र–यंत्र–कल्पादि शास्त्रो पण सारा प्रमाणमा दृष्टिगोचर थाय छे.

गणधरप्रणीत अगसूत्रो(आगमग्रंथो)मा बारमा दृष्टिवादमा मन्त्रविद्यानो समास दशमा विद्याप्रवाद नामना पूर्वमा थयेलो हतो, बधा पूर्व नष्ट थता ते पूर्व पण नष्ट थयु छे, तेनी अदरनी कहो के अन्य स्थाननी कहो पण मंत्रविद्या पछी पण चालु रही छे. ते विद्याना प्रभावे पछीना समयना जैनाचार्योए पण शासनोन्नति करी छे.

दश पूर्वधर श्रीवज्रस्वामी जेवाए धार्मिक उन्नति करी जैनधर्म–सघनी सेवा बजावी अने युगप्रधान तथा समकितना सडसठ बोलमा जणावेला आठ प्रभावकमाहेला छठ्ठा " विद्यामन्त्रबली " प्रभावक थया, ते मन्त्रविद्याना बले थया छे. पछीना समयमां अनेक आचार्योए पोतानी मान्त्रिक शक्तिथी धार्मिक कामो करी शासनोन्नतिना कार्यमा अपूर्व फालो आप्यो छे. वज्रस्वामी पछी पादलिप्ताचार्य–

हरिभद्रसूरि–वादिदेवसूरि–हेमचन्द्राचार्य–जिनदत्तसूरि–जिनप्रभसूरि–हीरविजयसूरि- शान्तिचन्द्रोपाध्याय वगेरे आचार्य–उपाध्याये पोताना संयम–त्यागशक्ति अने प्रखर विद्वत्ता साथे मांत्रिकशक्तिथी शासनोन्नति करी छे, जे सुविदित छे.

आ उपरथी ए सिद्ध थाय छे के धार्मिकउन्नति–शासनप्रभावनामां शुद्ध मान्त्रिकशक्ति घणु काम करे छे, पण ते मंत्र यंत्र तत्र कल्पो शुद्ध सात्त्विक रीते वापरवा जोइए अने ते शुद्ध हृदयना लाभालाभनो विचार करनार योग्य त्यागीओ तरफथी वपरावा जोइए. तेवा मंत्रयत्रादिना कल्पो केटलाक वखतथी ते विद्या जाणनार अनुयोगाचार्य प. श्री प्रीतिविजयजी गणिना हस्तक छपायेला छे अने आ मंत्रविद्यानो ग्रथ " बृहत् ह्रींकारकल्प विवरण " अने " वर्धमान विद्याकल्प " पण तेमना उपदेशानुसार ज छपायेल छे.

तेमां प्रथमना " बृहत् ह्रींकारकल्प विवरण "ना कर्त्ता लघु खरतरगच्छालंकार श्री जिनप्रभसूरिजी छे अने बीजा " वर्धमान विद्याकल्प " वाचक चन्द्रसेनोद्धृत छे.

विक्रमना चौदमा सैकामां थइ गयेला आ० जिनप्रभसूरिजी एक प्रभाविक पुरुष थया छे. तेओ सर्वदेशीय प्रखर विद्वान् हता. सांभळवा प्रमाणे तेओने एवो नियम हतो के दररोज एक स्तव–स्तोत्र–स्तुति बनाव्या पछी आहार करवो. जे कारणथी तेमणे अनेक स्तोत्रो- स्तवो–स्तुतिओ प्राकृत–संस्कृत–अपभ्रंश–फारसी वगेरे भाषामां बनावेला हाल पण सेंकडोनी सख्यामां मोजूद छे. ते सिवाय अनेक ग्रंथो–ग्रंथ उपरनी टीकाओ, अवचूरि अने कल्पो बनाव्या छे तथा मंत्रतंत्रनी पण रचना करी छे.

अही तेमना अन्य ग्रंथोनी सूचि आपवामां आवी नथी पण तेमणे मंत्रविद्यादि विषय सबंधी जे साहित्य लख्युं छे अने तेमांथी जे उपलब्ध थाय छे ते जणाववामां आवे छे.

(१) पद्मावती चतुष्पदि, (२) विजयमत्र कल्प (३) उपसर्गहर स्तोत्र वृत्ति (४) फलवर्द्धि पार्श्वनाथ स्तोत्र (५) पचपरमेष्ठि महामत्र स्तवन (६) शारदाष्टक (७) शारदा स्तोत्र (८) पार्श्वजिन स्तोत्र (९) गौतम स्तवन (१०) वर्धमान विद्यास्तव (११) सूरिमत्राम्नायकल्प (सूरिमंत्र बृहत्कल्प विवरण के जे आ ग्रथावली तरफथी चोथा पुष्प तरीके प्रसिद्धि पाम्यो छे. जे हाल अप्राप्त छे) (१२) ह्रींकारकल्प (बृहत् ह्रींकारकल्प विवरण—जे आ ग्रथ छे ते) वगेरे मंत्रकल्पादि साहित्य छे.

आ० श्री जिनप्रभसूरिनो जन्म मोहिलवाडी नगरना तात्री गोत्रना रत्नपाल श्रावक अने तेमनी पत्नी खेतलदेवीथी थयेल सुभटपाल पुत्र ते ज श्री जिनप्रभ

ते महापुरुषना जन्मनी शुद्ध मिति मलती नथी पण केटलाक कारणोथी जणाय छे के स० १३२५ थी १३३२ नी वचमा तेमनो जन्म थयो होवो जोइए. तेमणे श्रीलघुखरतरशाखाना प्रवर्तकाचार्य श्रीजिनसिहसूरि पासे स. १३३६ नी आसपास दीक्षा लीधी जणाय छे. [श्रीजिनसिहसूरिजीनु आयुष्य थोडु रह्यु त्यारे तेमनी साध्यदेवी पद्मावतीए कह्यु के तमो श्रीजिनप्रभने गच्छनायकपदे स्थापो, हु तेमनी धर्मउन्नतिमा सहायक थइश. तेथी तेमणे जिनप्रभने गच्छनायक पदे स्थाप्या, देवीए सहायक तरीके तेमनी पासे धर्मोन्नतिना घणा कामो कराव्या] सवत् १३४१ मा सूरि—गच्छनायक पद मळ्यु. तेमना वखतमा भारतनु भाग्य कमनसीब बन्यु हतु. जुल्मी मुसलमान बादशाहोना दोरदमाम अने धर्मान्ध वर्तनथी वातावरण क्लिष्ट बन्युं हतु मदिरो भूशायी थता हता. हिन्दु प्रजा हेरानपरेशान थइ रही हती त्यारे आ प्रभाविक मत्रविद आचार्ये मुसलमान बादशाह महमदशाहने पोतानी मत्रविद्याथी अनुरागी बनावी शाति स्थपावी तथा मदिरो उपर उपद्रव न करे तेवा अनुशासनो मेळव्या. ए प्रमाणे तेमणे अनेक धार्मिक उन्नति—शासनप्रभावना करी स. १३९० पछीना वर्षमा स्वर्गवासी थया

आ मंत्रग्रंथना प्रकाशित थया पछी पं. श्री प्रीतिविजयजी महाराजनी भावना छे के षोडशक प्रकरण मूळ अने तेनी बे टीकानो अनुवाद जे दानवीर शेठ माणेकलाल चुनिलालनी आर्थिक सहायथी पं. चंदुलाल नानचदे कर्यो छे ते अने तिलकाचार्यकृत जीतकल्पवृत्ति तथा विविध प्रकारना मंत्र–विद्या–कल्पो छपाववा. ते समय अने सहायकनी अनुकूलताए छपाशे.

" श्री सूरिमन्त्रयन्त्रसाहित्यादि ग्रंथावली " मां नीचे लखेला पुस्तको बहार पड्या छे, अने ते दरेक ग्रंथो भेट अपाया छे.

पुष्प. १ सूरिमंत्र कल्पविवरण (देवेन्द्रसूरिकृत)
पुष्प. २ सूरिमंत्र नित्यकर्म (राजशेखरसूरिकृत)
,, ३ सामाचारी (तिलकाचार्यकृत)
,, ४ बृहत् सूरिमंत्र कल्प विवरण (जिनप्रभसूरिकृत)
,, ५ महाभारत तत्त्वसार व्याख्यानसार संग्रह
,, ६ जिन प्रतिमा पूजनविधि
,, ७ सूरि मंत्र पटालेखनविधि (विजयदेवसूरिकृत)
,, ८ बृहत् ह्रींकार कल्प विवरण
,, ९ वर्धमान विद्याकल्प (वाचक चन्द्रसेनोद्धृत)

मास्तर **लक्ष्मीचंद सुखलाल शाह.**
माटुंगा. जी. आइ, पी.
भांडारकररॉड, हरखचंद हाउस.

॥ अथ ह्रींकारकल्पो लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं ऐं त्रैलोक्यमोहिनी चामुंडा महादेवी सुरवंदनी ह्रीं ऐं स्वाहाः। एतन्मंत्रं उजीयाणे योगिनीहृदयं न कस्यापि च दातव्यं, न कस्यचित्कथनीयं। भुक्तिमुक्तिप्रदं मंत्रं, देवानामपि दुर्लभं। १। योऽपि पाठकसंयुक्तं सोऽपि यदि जपति तदा पातकान्मुच्येत निःसंदेहम्। १। ह्रींकारो महाराजः कामराजः स्वभवसिद्धिदो कामराजः सर्वेषां साधकानां सिद्धिर्भवति। ह्रींकार जपेद्वितस्तदा स्तोककाले गुरुभक्तिए सिद्धि हुवे। काव्यकर्ता वचनसिद्धिर्भवति। अणिमादि सिद्धि हुए।

ह्रींकारेण विना यंत्र, मंत्रोऽप्यनुविधेस्ततः। न सिध्यति क्रियाकांडं, त्रिफली जायते यतः ॥ १ ॥

सविहुं यंत्र मंत्र नो ह्रींकारस्वभावसिद्धिः कामराजस्य। भणी कहीये जे वात मनचिंतन करीये ते सिद्धि पामे, जप्यां स्मरण कर्या थकां॥ ए अक्षरमांहे चोवीस तीर्थंकर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरादि सर्व देवतामय जाणनों। सर्व तीर्थ कर्यां फल (थाय) जेम (तेम) ध्यायां फल, देव-देवी-जोगणी प्रसन्न थाय। भाग्यहीन सिद्धि पामे। हवे एनो विधि कहे छे—

पूजा १, ध्यान २, वर्ण ३, होम ४, जाप ५, मंत्र ६, क्रिया ७, एटला प्रकारे (सात प्रकारे) साध्यां फल हुवे । ताम्रपत्रे पंचांगुल प्रमाणो ह्रींकार कुंकुमेन लिखित्वा रक्तपुष्पैः अष्टोत्तरशतैः पूजयेत् । हीयामांहे रक्तवर्ण चिंतवीये, ध्यान-युक्त करे महालाभ । रामावशी भवति । इत्यादि सर्व काम चिंतवीए ते सिद्धि पामे ॥१॥ तथा कुंभमध्ये दीपशिखा, तदग्रे निरन्तरं दीप्यमान ध्यावे, ह्रींकार स्वर्ण सरीखुं, एक लक्ष जपीये, जीसे ध्याने तीसे वस्त्र पहेरीजे, जपमाला पण तीसी लीजे । पीत वस्त्र, पीत जपमाला, जापेन द्रव्यप्राप्तिः । १ । रक्त वस्त्र रक्त जपमाला (जापेन) आकर्षणं । २ । श्वेते मुक्ति । ३ । नीलवर्णे बुद्धिप्राप्तिः । ४ । कृष्ण धूमवर्णे शत्रुउच्चाटनं ।५। ह्रींकार रेचकवायुने योगे कृष्णध्यान जपवो–ए विधि करवी । शत्रु नाम हृदे चिंतवीए, दिन ४–५ में उच्चाटन होय, ज्वरेण गृह्यते, नाना व्याधि (हुवे), यदि स्वस्थं, शत्रु उपर दुग्ध-धार रचीये, ईकवीस सहस्र जपवो, स्वस्थ थाय। सर्व उपद्रवे अनेराह सर्व उपद्रवे, अनेराई तेहने ईकवीस सहस्र जपी श्वेतधारा शिरके उपर चिंतवे दोष उपशमे। ह्रींकार जपतां सर्व देवता योगिनी वश थाय । शाकिनी, भूतप्रेत, पिशाच पराभवे नहि। राजा–मनुष्य वश हुवे। सिंह, व्याघ्र, सर्प, व्याल सर्व चतुष्पद नासे । सत्त्व १, रज २, तमः ३, एटला प्रकारे माया साधे, सर्व सिद्धि (थाय) ॥ अथ पूजाविधि (लिख्यते)—

ताम्रपत्रे पंचांगुलप्रमाण प्रतिष्ठापयेत् । प्रतिष्ठाविधिश्चायं—चतुष्किकायां घृतभृतरक्तवर्त्तिप्रदीपस्थापनं । पत्रस्थद्राक्षा-रसाक्लिन्नवस्त्रपरिधापनं । पंचसुस्थानेषु कुंकुमपूजा । आग्नेयादिविदिक्षु ॐ बटुकनाथाय नमः । ॐ गंगणपतये नमः । ॐ दं दुर्गाय नमः । ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । रक्तपुष्पैर्यंत्र पूजां कृत्वा, तदग्रे अविच्छिन्नधारया सर्षपरेखा कार्या । अगरु-

दाहनं। द्राक्षारसेन यंत्रतर्पणं। प्रदीपजपमालयोः कुंकुमपूजा। अ आ पूर्वे। इ ई दक्षिणे। उ ऊ पश्चिमे। ए ऐ उत्तरे। ओ औ उर्ध्वं। अं अः पाताले। एतान्यक्षराणि चतुर्दिक्षु न्यस्य सन्मुखं दिग्पूजा; कुंकुमपुष्पादिना दिग्पूजयेत्। हृतकमलेन मार्गेण ब्रह्मरंध्रद्वारा निष्कास्य, यंत्रगर्भे श्रीमन्महामायादेव्या आवाहनमुद्रया आवाहनं कर्तव्यं। अनेन मंत्रेण तद्यथा—ॐ ह्रीं नमोऽस्तु भगवतिमहामायायै। आद्यशक्ते। ह्रींकाररूपिणि। एहि एहि संवोषट्॥ इत्यावाहनमुद्रया कर्तव्यं॥ १॥ ॐ ह्रीं नमः अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापिन्या मुद्रया स्थापनं॥ २॥ ॐ ह्रीं नमः मम सन्निहिता भव वषट्। सन्निद्रापिन्या मुद्रया संनिधापनं॥ ३॥ ॐ ह्रीं नमः पूजां यावत् अत्रैव स्थातव्यं। सन्निरोधिन्या मुद्रया सन्निरोधनं॥४॥ ॐ ह्रीं नमो परेषामद्रश्यो भव। अवगुंठिन्या मुद्रया अवगुंठनं॥ ५॥ ॐ ह्रीं नमोऽस्तु आमृतीकृतो भव। धेनुमुद्रया॥ ६॥

ततो जपाकुसुमसंकाशां, मंजीष्टवसनावृतां। चंद्रकलालंकृतभालां, त्रिलोचनां चतुर्भुजां॥ १॥

सन्मुखं पश्यती ह्रीं महामायादेवी उपरितनवामदक्षिणकरपाशांकुश, अधस्तन वामदक्षिणकरवरदान्। भयदां। अष्टदलकमलकर्णिकायां क्रौंकारलक्षण्यप्रेतास नासीनां गर्भे वारान् १०८ मायाबीजं मुक्ता रक्तपुष्पै रक्तगंधैः पूजा कार्या, क्षीरादिमेवा नैवेद्यढोकनं। ॐ ह्रीं नमः जपं कृत्वा यथाशक्ति।

ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतं। तत्सर्व कृपया देवि! क्षमस्व परमेश्वरि!॥ १॥

इत्युक्त्वा क्षामयित्वा अस्त्रमुद्रया क्षोभयित्वा यंत्रगर्भा देवी ब्रह्मरंध्रा हृदयकमले स्थाप्या, नैवेद्यं स्वयं प्रसादे कुरु कुमारी

च । पूजा एवं ॥ प्रतिष्ठाकार्यकाले पूर्वोक्तपूजां कृत्वा अद्यास्मिन् वर्षे, मासे, पक्षे, तिथौ, अमुकश्रेयार्थं वामसकलकाये ! सिद्धार्थे ! भगवत्या महामाया आद्यशक्ते ह्रींकाररूपाया लक्ष जापप्रारंभे, स च जापो भगवत्या प्रसादात् सफलो भवेत्, इत्युक्त्वा जापं प्रारभ्य जपमालायां मणिघर्ष मेरुलंघनवर्ज्य, जापान्तरेऽष्टपुटकं निद्रा वर्ज्या ॥

अथ ध्यानविधिः—वश्यकर्मणि सिंदूरसदृशं जपाकुसुमसंकाशं वा साध्यललाटे ध्येयं । तस्य महाभोगा भवन्ति । लोकाश्च स्त्रियो दास्यतां व्रजत्येव ॥ १ ॥ स्तंभादि कार्ये पीतवर्ण हरिद्रा हरितधाराभिर्वर्षितं, अक्षरं चिंतनीयं, तेन विषाग्नि-शत्रुसंग्रामसैन्याप्रस्तरवज्रपातनादिं स्तंभयति ॥ २ ॥ विद्वेषणादिभृंगीजनसमशशेः शिरसि ललाटे स्कंधे हृदि नाभौ गुह्ये जंघयोर्वा रौद्ररूपेण ध्येयं, शशेर्ज्वरग्रहोत्पादकं दलादयो भवंति ॥ ३ ॥ शान्तिकादौ श्वेतवर्णं दुग्धधाराभिर्वर्ष चिन्त्यं, ग्रह-रोगमार्यादीनां पीडामुपशाम्यति ॥ ४ ॥ अथवा शुद्धस्फटिकसंकाशं मुखानिःस्मरन्, नाभौ प्रविश्य चतुर्वर्णयुतेन ध्यातव्यं तज्जपात् अणिमादि सिद्ध्याष्टकं लभ्यते । कवित्वं करोति । अनेकान् ग्रन्थान् ग्रह्णाति । निष्पापदेहश्च भवति । एवं विषमेव कास्यं । मुखनिःस्सरन् नाभौ प्रविशन् च ॥ दिने लक्षजापः पूरणीयः, जापान्ते दशांशहोमः स चैवं—अखंडाक्षतानां चूर्णं, घृतमधुशर्करामिश्रं कृत्वा च अर्कप्रमाणाः सहस्रगुटिका (१२००० गुटिका) कार्या, प्रान्ते घृतमध्ये २ होतव्यं, देहे धाष्टं घृतं विनां, तेति वचनात् तदंते द्राक्षा १०८, खारिक १०८, बिदाम १०८, हुता घृतभृतं, नालिकेरः पूर्णो होतव्यो ॥ १ ॥ वषट् वश्ये । १ । विद्वेषणे हुं । २ । आकर्षणे संवोषट् । ३ । उच्चाटने फट् । ४ । मारणे घे घे । ५ । शान्तिके स्वाहा । ६ । पौष्टिके स्वधा । ७ । गरुडे हंस । ८ । सर्वौषधी वः ॥ ९ ॥ आकर्षणे वश्यं च रक्तं । १ । विद्वेषणे धूम्रं । २ । उच्चाटने

मारणे च कृष्णं । ३ । शान्तिके पौष्टिके गारुडे (च) श्वेतं । ४ । स्तंभने पीतं ॥ ५ ॥ स्तंभनं वश्यं उत्तरे । १ । आकर्षणं दक्षिणे । २ । स्तंभनं पूर्वे । ३ । मारणं इशाने । ४ । विद्वेषणं आग्नेय्यां ।५। उच्चाटनं वायव्यां ।६। शान्तिकं पश्चिमायां ।७। पौष्टिकं नैऋत्यां ॥ ८ ॥ पूर्वाह्ने वश्यं । १ । मध्याह्ने विद्वेषणं । २ । अथ पराह्ने उच्चाटनं । ३ । संध्यायां मारण । ४ । अर्ध-रात्रे शान्तिकं । ५ । प्रभाते पौष्टिकं ॥ ६ ॥ इति मायावीज मंत्राराधनविधि समाप्तः ॥

मायावीज नमस्तुभ्यं, शाश्वतं परमं पदं । त्रिमिश्रं देवताये च ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ॥ १ ॥
अकारेण भवेद्विष्णुः, रेफवीजैश्चतुर्मुखः । हकारेण हरः प्रोक्तः, तस्यान्ते परमं पदम् ॥ २ ॥
सफररेफ मारुदं, सकलं इन्द्रमंडितं । ईन्दरं विन्दुना युक्तं, उक्तत्वाद् योगिनीमते ॥ ३ ॥

ह्रींकारमिदं मन्त्रं लक्षजापेन पातर् दिने न च नवदिनमध्ये, पश्चात् होम विधिरयं--

गोघृतं माक्षिकं चैव, खंड श्वेता च सर्षपाः । द्राक्षा गोक्षीर संयुक्तं, गुग्गलं यवतंदुलान् ॥ १ ॥
एतानि गुटिकां कृत्वा, ज्वलद् वह्नौ विचिक्षिपेत् । गुरुनमस्कार पूर्वं, ह्रीँ भ्रूयात् भक्तिकेवलं ॥ २ ॥
ध्यानमध्ये द्वयं चिह्नं, कथयामि सुनिश्चितं । अक्षतं दीपसंयुक्तं, हृदि धार्य निरालयं ॥ ३ ॥
स चाक्षरं नु ध्यानेन, हृदये परवश्यति । अवश्यं वशतां यान्ति, चिंतितं लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥

कथयामि गुणाः सर्वे, जपमानेन येन स्युः । अंगस्फुरणं कंडू च, तस्य फलमहं ब्रुवे ॥ ५ ॥

(फलं-) वामांगो कंडु स्फुरणा-चिन्तितं न सिध्यति । १ । दक्षिणांगे कार्यसिद्धिः । २ । शिखायां राज्यलाभः । ३ । चक्षुषो दुर्जनः प्रभवति । ४ । श्रवणे कंडु स्फुरणे परिकरे युद्धं उद्वेगं । ५ । कूर्चकंडू गमनं । ६ । बाहु प्रियकंटालिंगनं । ७ । हृदये सर्वकार्य शोधनं ॥ ८ ॥ नाभौ नारीचिंता । ९ । पृष्ठे रिपुयुद्धं । १० । कंठे शूद्रवश्यं । ११ । पार्श्वेन श्रीलाभः । १२ । वाम जंघा चक्षुपीडा । १३ । जान्वौ धनहानिः । १४ । पादतले लाभं । १५ । दक्षिणजंघायां वस्त्रलाभः । १६ । पींड्यां चतुःपद लाभः । १७ । यथा कंडूं तथा स्फुरणं ज्ञेयं । १७ ।

ऽकार जृंभिका च ध्याने शुभा पुनर्भावं प्रवक्ष्यामि । यो रिपु हृदये बाध्यते, तदा ध्यानकाले ह्रीँ ह्रं फुटो नमः तस्य शत्रुर्ध्वंस्यति । १ । दुर्लभवस्तु मासौ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ नमो जपेत् शीघ्रं लभेत् । २ । द्वयोमित्रयोः परस्पर विरोधस्पृहया ह्रीँ षु जप्यतेऽतो परस्परं कलहायते । दिशोदेशं यातः क्वापि न मिलतः मध्याह्ने । ३ । यदा स्वस्थाने दुर्जनागमनं न गवेषयति तदा ह्रीँ ते इति ध्यानं । ४ । सुहृज्जनवश्ये ह्रीँ वषट् जापः पूर्वाह्ने । ५ । कस्याप्याग मनस्पृहया ह्रीँ संवोषट् जपेत्, तत्क्षणादायाति । ६ । गृहे चिंतनया मनस्युद्वगे ह्रीँ स्वाहा इति अर्धरात्रौ । ७ । संग्रामे ह्रीँ स्वधा हा रिपुर्नश्येत् प्रभातः । ८ । निद्रायां लोक ह्रीँ दे जापः । ९ । दोपं करोति यस्तस्योच्चाटने ह्रीँ फट् ध्यानं; अपराह्ने । १० । रिपोर्मारणे नाशने च संध्या कृष्ण ध्याने जपेत् ह्रीँ जंघे स्वरेण । ११ । कामलुब्धः कामपिस्त्रियं वांच्छन् यदाक्षरं भगमध्ये रक्तद्रष्टया पश्यंति नग्नने ध्यानं क्रियते सा कामपीडिता नग्ना चायाति । १२ । ललाटे अक्षरं आरक्तं अरुणवर्णं मनसि कृत्वा वश्यं

वश्यकारणं किंकरा इव । १३ । सिंदूरवर्णं यस्य हृदि अक्षरं ध्यानध्ये चिंतयति वश्यं करोति । १४ । राजस्त्रीवश्य करणे मुखे अक्षरं धारयेत् । १५ । भ्रूमध्ये इश्वरखंड विदधाय ललाटके वश्यं तत्क्षण मायाति । १६ । भर्तारद्विष्ठानायदा तन्नाभौ धार्यं चाक्षरं तथा बंधति पादेन केममाकृष्य हस्तके ध्याने एवं विधिः कुर्यात् क्षीप्रं सा वशीस्यात् । अप्रशस्तवादिनी तदा जिह्वाग्रे ह्रीँ जापः । तदुर्वाच्यो कृष्णं कारयेत् । मवँ पेटे क्षुरिका विदारयेत् मध्ये कर्त्तरिकं हृदयं सिद्धिं प्राप्नोति । हुं हुंकारनु कारयेत् । ऋ ण ण चार्यां अक्षर जपित्वा पृष्ठि हृद्वंश पुनर्न मःर्गयति नाभौ । १ । हृदि । २ । मुखे । ३ । गुह्ये । ४ । ललाटे । ५ । हस्ते । ६ । मस्तके । ७ । जप्यतेऽक्षरधार्यः सुखसिद्धिर्भविष्यति । १ । शान्ते स्वाहा । १ । स्वधा पौष्टिके । २ । रक्ते वषट् । ३ । पीते जंबू फट् । ४ । स्तंभे कृष्णे घे शत्रुमारणे । ५ । धूम्रवर्णं ह्ययं प्रोक्तं विद्वेषणे उचाटने तथा । द्रेकारि फट् शब्देन ह्रीँ जपित्वा विचकृणेऽउर्धाशननृशिखाया । ६ । मूलानिनेत्रयो मारए सर्व दुष्टानि; तत्क्षणे नैव संशय । ४ ।

रक्तध्यानेन मुध्नां च ललाटस्थो निरीक्षयेत् । अवश्यं जायते वश्यं, पृथिव्यां चैव खेचराः ॥५॥

स्थंभयेच्चंद्रमुद्रा च, शंखमुद्रां च कारयेत् । पीतवर्ण समालोक्य, स्तंभनं जायते नृणां ॥ ६ ॥

शून्या रूपनिरालंव, मुद्रा च कसलं भवेत् । मूर्ध्नि चिंत्यं, सितं ध्यानं, सर्व च विषनाशनं ॥ ७ ॥

स्फुटिकवर्णमाकारं, विमलं जल सन्निभं । खगत्वं कारयेद् वीजं, यदा ध्यायेद्दिवानिशं ॥ ८ ॥

॥ इति श्री मायावीज ध्यान फलं शुभम् ॥

ह्रीँ नमः देवदत्त दीपनश्यति केन । १ । देवदत्त ह्रीँ नमः पल्लव देखे । २ । ह्रीँ देवदत्त नमः संपुटं वश्ये । ३ । ह्रीँ देवदत्त नमः रोधनवधे । ४ । दे ह्रीँ न द म त्त गं घनं आकर्षणे । ५ । ह्रीँ देवनृमः दत्त विदर्भो स्तंभनात् । ६ । ब्रह्मादि लोकनाथं ह्रींकारं ष्यौमषात् मदनोपेतं पद्मे च पद्म च पद्मकटि निनमोंतगो मूलमंत्रोयं । १ । ओँ ह्रीं ह्रीँ ह्रैँ ह्रूँ कक्लीँ पद्मे पद्म-कटिनी नमः ।

सिध्यति पद्मादेवी, त्रिलक्षजापेन पद्मपुष्पाणां । अथवाऽरुण करत्रिकं, संवृत पुष्प प्रजापेन ॥ २ ॥
मधुमधुरत्रिकामिश्रित, गुग्गलकृत चणकमात्र गुटिकानां । त्रिंशत्सहस्त्र होमात्, सिध्यति पद्मावती देवी

तत्त्वावृतिं नाम विलिख्यपत्रे, तद्धोमकुंडेन खने त्रिकोणे ।
स्मरेषुभिः पंचभिराभिवेष्ट्य, वाह्ये पुनर्लोक पतिप्रविष्टय ॥ ४ ॥

मंत्रस्यां ते नमः शब्दं, देवताराधना विधौ । तदंते होमकालेनु, स्वाहा शब्दं नियोजयेत्॥ ५ ॥
चतुरस्त्रं विस्तीर्ण—रेखात्रय संयुतं चतुःद्वारं । विलिखेत् सुरभिद्रव्यै, यन्त्रमिदं हेमलेखिन्या ॥ ६ ॥
धरणेंद्राय नमोऽधच्छदनाय नमः तथोर्ध्व छदनाय नम । मध्यछदनाय नमो, मंत्रान् वेदादिमायाधान् ॥
प्रविलिखेत् तान् क्रमशः, पूर्वादिद्वार पीठरक्षार्थं । दशादिग्पालान् विलिखेत्, इंद्रादीन् प्रथमरेखान्ते॥

ल र स षे व य सहवर्णान्, सबिंदुका नष्टदिक्पातिसमेतान् ।
प्रणवादि नमोंतगतान्, तो ह्रीं मध्याधोर्ध्वछदन संज्ञान् ॥ ९ ॥

दिक्षु विदिक्षु क्रमशो, जयादि जंभादि देवतां विलिखेत् । प्रणवात्रिमूर्ति पूर्वान् मोंतगा मध्यरेखान्ते ।१०।
आधा जया च विजया, अजीता च तथाऽपराजिता देव्यः । ज्रंभा मोहास्तंभा, स्तंभिन्यो देवता एताः ॥
तन्मध्येऽष्टदलांभोज, मनंगकमलाभिधां । विलिखेच्च पद्मगंधा, पद्मास्या पद्ममालिकां ॥ १२ ॥
मदनोन्मादिनी पश्चात्, कामोद्दीपन संज्ञिका । संलिखेत् पद्मवर्णाख्या, त्रैलोक्यक्षोभणी तलः ॥१३॥
तेजो ह्रूँकार पूर्वोक्ता, नमः शब्दावसानगाः । अकारादि हकारान्ता, केसरेषु नियोज्यते ॥ १४ ॥
भुक्तियुक्तो भवनेशश्चतुष्कलायुतं कुटमघदेव्यवर्णा चतुष्क नमोन्तः ।स्थाप्या प्राच्यादि दिक्षु पद्मवाहिः ॥
एतत्पद्मावतीदेव्या, भवेद् वक्त्रचतुष्टयं । पंचोपचारतः पूजा, नित्यमस्याः करो नृ च ॥ १६ ॥
त्रह्ममाया च ह्रूँकारे, व्यौमक्लींकार मूर्धगं । श्री च पद्मे नमो मंत्र, प्राहुर्विद्या षडक्षरी ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं ह्रैं ह्रूं क्लीं श्रीं पद्मे नमः ।

वग्भावं वित्तनार्थं च, ह्रौँकाहषान्तमूर्ध्वगं । बिंदुद्वयुतं प्राहु, बुधास्त्रयक्षरीमिमां ॥ १८ ॥

ऍं क्लीँ ह्रौँ ।

वर्णान्तः पार्श्वजीनो, रेकस्तदधोगतः स धरणेन्द्रः । तुर्यस्वरः सबिंदुः स भवेत् पद्मावती संज्ञः ॥ १९ ॥

इति जैनधर्मे ॥

ॐ ह्रीँ नमः ।

त्रिभुवनजनमोहकरी, विधेयं प्रणवपूर्वक नमोन्ता । एकाक्षरीति संज्ञा, जपतः फलदायिनी नित्यं २०

माया सेयं महामाया—बीजमिश्वरसंज्ञया । उभयोर्योगजं विश्वं, मायाबीज नमोस्तु ते ॥ २१ ॥

यो बिंदुः स पिता नु हो हरिरसौ, तुर्यस्वरो गीयते । यो रेफो दुरितौघमर्दनकरो, रूद्रः सदा कीर्तितः ॥

यः प्राणः स परः स भगवन्, नादः शिव सर्वदा । देवी चंद्रकला कलंकरहिता मायेति तुभ्यं नमः ॥२२॥

ॐ ह्रीँ पद्मावती नमः । इति शैवमते ।

असाध्यं तस्य नो किंचित्, योजयेत् नित्यमेव हि । एकाग्रचित्तो नासाग्र—न्यस्तद्रष्टि समाहित ॥ २३ ॥

लक्षजापेन ध्यानेन, इष्टसिद्धिः प्रजायते । अतः परं वरो नास्ति, मंत्र विद्या वरानने ॥ २४ ॥

दशलक्ष जापहोमात्, प्रत्यक्षो भवति पार्श्वयक्षोऽसौ। न्यग्रोधमूलवासी, श्यामांगस्त्रिनयनो नूनम् २५

ॐ ह्रीँ पार्श्वयक्ष दिव्यरुप महर्पण । एहि ॐ ॐ नमः । लक्षमेकं जापः । मूलं दसमहस्र होमं कृत्वा। पार्श्वयक्षाराधन-विधि मंत्रोऽयं ॥ ॐ नमो अरिहंताणं अहो अहं मम वाहो कायोत्सर्गेण उर्ध्वी कुरु कुरु स्वाहाः ।

सद्र्णया य ळे य मध्यसिद्ध-मधीश्वरं भासुररुपभासं ।
षडिंदुविंदु स्फुट नादशोभं, त्वां शक्तिबीजं प्रमनां प्रणौमि ॥ १ ॥

ह्रीँकारमेकाक्षरमादिरुपं, मायाक्षरं कामदमादिमन्त्रं ।
त्रैलोक्यवर्ण परमेष्टिवीजं, नम्राः स्तुवन्ति निभवन्ति नित्यं ॥ २ ॥
शिष्यः सुशिक्षा सुगुरोरवाप्य, भुविर्वशी धीरमनाश्च मौनी ।
त्वदात्मवीजस्य तनोपजाप-मपांशु नित्यं विधिना विधिज्ञः ॥ ३ ॥
त्वां चिंतयन् श्वेत कगानुकारां, ज्योत्स्नामयीं पश्यति यस्त्रिलोकीं
श्रयन्ति ते तत्क्षणतो भवघ्ना विद्याकला शान्तिकपौष्टिकालिं ॥ ४ ॥

त्वामेव वंचारुणमंडलाभां, स्मृत्वा जगत् सत्करजालदीप्रां ।
विलोकयंतः किल तस्य विश्वं, विश्वं भवेद्वश्यमतस्तमेव ॥ ५ ॥
यस्त.......चारुदीपं, पिंगं प्रभत्वांकल यः समन्तात्।
सदा मुदा तस्य गृहे सहेलं, करोति केलिं कमला चलापि ॥ ६ ॥
यस्या मलंकज्जलमेवकायां त्वां वीक्षते चानुष....धूम्रं।
विपक्षपक्षं खलु तस्य वात–हताभ्रवद्यान्त्याचिरेण नाशं ॥ ७ ॥
आधारकंदोद्गत तत्तु सूक्ष्म–लक्ष्मौन्मिषद् ब्रह्मशिरोज भासं ।
यो पायनीतिश्रवदिंदुबिंबा–मृतं स स्यात् कविसार्वभौमः ॥ ८ ॥
षट्दर्शनीयः स्वमतां वलेयात्, सदैव तत्त्वन्मयबीजमेव ।
ध्यात्वा तदाराधनचित्तमध्ये, भवेदजेया परवादवृंदैः ॥ ९ ॥

किं मंत्रयंत्रै र्विविधागमोक्तैः, दुःसाध्यसंसीनफलानि लाभैः ।
सुसेव्य सद्यः फलचिंतितार्था, सा धिकप्रदश्चेतासि चित्तमेकः ॥ १० ॥

चौरारिमारिग्रहरोगलूजा–भूतादिदोषानिलबंधनोत्थाः ।
तव प्रभावात् तव दूरमेव, नश्यंति पारिंद्रवादिवेसा ॥ ११ ॥

लभेदपुत्रः सुतमर्थहीनः, श्री र्दीयते पत्तिरपीशतीह ।
दुःखी सुखी वाथ भवेथ किं किं, त्वज्जापचिंतामणिचिंतनेन ॥ १२ ॥

पुष्पादिजापामृतहोमपूजा, क्रियाकरः प्राणकिलोऽस्ति दूरे ।
यः केवलं ध्यायति....मेव, सौभाग्यलक्ष्मीर्व्रुणुते स्वयं तं ॥ १३ ॥

त्रयोऽपि लोकाः सुकृतार्थकाम–मोक्षादि....र्छोश्चतुरो लभन्ते ।
यास्यन्ति यातावथ यान्ति ये च, श्रियः पदं त्वन्महिमालवाक्षे ॥ १४ ॥

विधाय यः प्राक् प्रणवो नमोन्ते, मध्ये च बीजं ननु जंजपंति ।
तस्यौवकर्णादितनोत्व वंध्या, कामार्जुनी कामितमेव विंद्यात् ॥ १५ ॥
माला निशा स्तुतिमयी सकला त्रिलोकी, विजस्यहिस्त्व हृदये कुरुते त्रिसंध्ये ।
अंकेष्टसिद्धिनिवसा लभतीह तस्य, नित्यं महोदयपदं लभते क्रमेण ॥ १६ ॥

॥ इति श्री मायाबीजस्तवनं समाप्तम् ॥

ह्रींकारस्य किं तत्त्वं, वदे कौतुहलं मम । अधुना श्रोतुमिच्छामि, मायाबीजस्य निर्णयः ॥ १ ॥

शंभुरुवाच---

ह हा देवि ! त्वया पृष्टं, देवानामपि दुर्लभं। ब्रह्मेन्द्रविष्णुदैत्याना--मपि गुह्यं हि सुंदरी ॥ २ ॥
न कस्यापि मया ख्यातं, विना त्वां तनुशोभने !। यं वर्गस्याष्टमं बीजं, बिन्दुभूषितमस्तके ! ॥ ३ ॥
चतुर्थस्वरसंयुक्तं, रेफेनापि समन्वितं । एवं देवि महामंत्रराजानं परिकीर्तितं ॥ ४ ॥
सहस्रदशजापेन, भूताः सिध्यन्ति नान्यथा । प्रेता विंशतिना चैव, वेताला त्रिंशता तथा ॥ ५ ॥

चत्वारिंशता पिशाचाः, पंचाशत् यक्षराक्षसाः । षष्ठ्या सहस्त्र गंधर्वाः, सप्तत्या किन्नराः स्फुटं ॥ ६ ॥
अशीति सहस्त्रे चापि, काव्यशक्तिः प्रजायते । नवत्या च सुराचार्यो, सिध्यत्यत्र न संशयः॥ ७ ॥
लक्षजापेन हे देवि !, अष्टसिद्धिः प्रजायते । अतः परं वस्तेनास्ति, मंत्रविद्या वरानने ॥ ८ ॥
एषा च परमा शक्तिः, मूलं च मथकोच्यते । विष्णुनामकला लोके, मायाबीजेन मोहिता ॥ ९ ॥
असाध्यं तस्य नो किंचित्, योजयेन्नित्यमेव हि। एकाग्रचित्तो नासाग्र--न्यस्तदृष्टिः समाहितः॥ १० ॥
स्थावरं जंगमं चैव, यदुग्रं कथितं विषं । ज्वालागर्दभविस्फोटां--घाटशीतलकादयः ॥ ११ ॥
ज्वराश्च विविधा घोराः, सन्निपातास्त्रयोदश । वधबंधादयो चान्ये, सिंहव्याघ्राश्च तस्कराः ॥ १२ ॥
ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्ति, तमांस्यर्कोदये यथा। एतद्ध्यानं प्रवक्ष्यामि, श्रुणु हे चन्द्रवत्सले !॥ १३ ॥
स्फटिकामलसंकाशं, हेमपूजेन सन्निभं । नाशयेद् विविधं जप्तं, मोक्षश्चापि प्रजायते ॥ १४ ॥
रक्तवर्णं तु यो ध्यायेत्, योनिमध्ये वरानने। आकर्षयत्युर्वशीरंभा--मुख्यादेव्यः किमु स्त्रियः ॥ १५ ॥
अन्नपूरनिवासी च, राजपत्नी च या भवेत् । आनयेत् तान्निसंदेहो, वस्त्रालंकारभूषिता ॥ १६ ॥

पीतवर्णं नु यो ध्यायेत्, कंठस्थं हृदि सुंदरी । स्तंभं क्षोभं विवादं च, विशेषं कुरुते नृणां ॥ १७ ॥
काकपक्षेण संकाशं, शत्रुणां हृदये स्थितं । उच्चाटयेन्न संदेहो, यदि शक्रसमो रिपुः ॥ १८ ॥
नाभिप्रदेशे यो ध्यायेत्, कृष्णरूपं वरानने । नरं तं मारयेन्नूनं,.......सदा भवेत् ॥ १९ ॥
एतन्मर्म महागुह्ये, प्रिये तुभ्यं वदाम्यहं । कुदिक्षिते न दातव्यं, दातव्यं तु सुदिक्षिते ॥ २० ॥
दर्शनं दूषितं यस्य, भोजने पापबुद्धिके । परद्रव्ये न हिंसा या, परदोषपरायणे ॥ २१ ॥
न दातव्यं तु दातव्यं, ब्रह्मचर्यदयारते । सर्वसिद्धिकरो ह्येष, भुक्तिमुक्तिप्रदायकः ॥ २२ ॥

॥ ईति श्री मायाबीज द्वितीय स्तवनं समाप्तं ॥

सिरिरिसहेसर अजीयजिण, संभव गयणदिणंद । अभिणंदण सिरिसुमईजिण, पउमप्पहजिणचंद ॥१॥
सिरिसुपासपहु चंदपहु, सुविहि सियल सामी । भगवं सिरि सिरिअंसजिण, वासुपुज्ज गयगामी ॥२॥
विमल अणंत अणंतगुण, धम्म धम्मधुरि संत । कुंथनाह अर मल्लिजिण, सुवय निरुवमकंति ॥ ३ ॥
णमि णेमि सिरि नाणनिहि, पाससामि सिरि वीरो । ए चउवीसे जिण नीयां, पाम्या भवुदहितीरो ॥ ४॥

फलिहवन्न निम्मल धवल, नादि निरंतर लीण । सिरि चंदप्पह सुविहिजिण, समरो वायविहीण॥५॥
लीहै वै वा विंदु तणी, उज्जलकंति सरीर । मुणिसुव्वय सिरि नेमिजिण, अरिभयभंजण धीर ॥ ६ ॥
वरविद्दुमआरत्ततणु, चंदकलाकयठाण । वासुपुज्ज सिरिपउमपहु, तिहुयणमोहण झाण ॥ ७ ॥
सिरि कुंडालीसंठविय, पास मल्लिजिण वेवि । नीलवन्न समरी सयल, रिधि खास आणेवि ॥ ८ ॥
वणयवन्न हरिरेहहीय, सोलस सेस जिणंद । समरी निम्मल गुरुहवयण, थंभो हु जिणवंद ॥ ९ ॥
ऋद्धिवृद्धिकल्याणकर, सुरनरवंदिय पाय । अकल अगंजित अतुलवल, चौवीसे जिणराय ॥ १० ॥
तिगुणवेटिय परवेटिया, मायाबीज मझार । अमिय पुण कल संचरै, ए बाहु चक्षु आधार ॥ ११ ॥
जे नर निम्मलदेहमण, लख्ख एक समरंति । ते उवएसे सुगुरु भणे, कम्मचक्कपगरंति ॥ १२ ॥
सिरि रिसहाओ सिरमंडल, हहूड पयाडियसं । विपटतणुतां भवियजण, सुह पामै सव्वेवि ॥ १३ ॥

॥ इति श्री मायाचतुर्विंशतिजिनमयबीजस्तवनं तृतीयं समाप्तम् ॥

श्री वामेयं जिनं नत्वा, धर्मकामार्थमोक्षदं । खेचर्या हि प्रसादेन, वक्ष्ये बीजप्रसाधनं ॥ १ ॥

अथ श्री मायाबीजकल्पम्—

गुह्ययुक्त्या च ध्यायामः, श्रद्धाभिर्निर्मलस्फटिकखंडमानीयते द्वादश यवप्रमाणं चतुरस्रं दलं कार्यं । यवत्रयप्रमाणं पिंडं स्थाप्यते । तस्योपरि मायाबीजपंचकं कार्यते । तेषां परिधा रेखा पंच कृत्वा रेखाप्रान्ते क्रौँकारं लिखेत् । वज्रेण सर्वयंत्ररेखा प्रकटीक्रियंते । एवं विधियंत्रं लिलिखेत् । मध्यगर्भं श्वेतबीजं अप्तत्त्वरूपं १, तत्पृष्ठे पीतबीजं पृथ्वी तत्त्वरूपं २, तदग्रे रक्तवर्णबीजं अग्नितत्त्वरूपं ३, तत्पृष्ठे नीलवर्णजं वायुतत्त्वरूपं ४, तत्पृष्ठे कृष्णवर्णबीजं आकाशतत्त्वरूपं ५ । अनया युक्त्या पंचबीजानि लिखेत् । परिधा रेखापंचकं क्रियते । तेषां तत्पिंडं क्रौँकारं लिखेत् । मध्यबीजं कर्पूरचूर्णं स्पेदायुतं रालेन सह दापयेत् । अनेन भेषजेन मुख्यबीजरेखायुतं स्पष्टं कारयेत् । तथा कुंकुमगोरोचनहिंगलंअहरालमिश्रं दापयेत् । रक्तबीजं द्वितीयरेखासहितं पूर्यते । तथा केसरगोरोचन गोदंतीसहितं रालयमिश्रं तापयेत् । पीतबीजं तृतीयरेखासहितं तेन पूर्यते । तथा पुनरपि गोरोचनकर्पूरजंगालरालय-

महितं नीलबीजं तापयेत् । चतुर्थरेखासहितं पूर्यते । तथा पुनरपि कर्पूरकुंकमकज्जलरालसहितं तापयेत् । कृष्णबीजं पंचमरेखासहितं तापयेत् । कृष्णबीजं पंचमरेखासहितं पूर्यते । मृगमदरालसहितं क्रौंकारं स्पष्टं कारयेत् । अनया युक्त्या मायाबीजयंत्रं प्रकटीक्रियते । पश्चात् पुष्यार्केष्युभयवेलायां उपोषकं कृत्वा स्नानादिशुचिशरीरसुंदरवस्त्राणि परिधाय पूर्वाभिमुखमुपविश्य कर्पूरचंदनकेसरमृगमदादिशुभसुंगधद्रव्यैर्वासं कृत्वा अजपामुखेन सहस्रमेकं मायाबीजजापः पूर्वं वासनिक्षिपेत्, तावता खंड धूपदीपादि क्रियते। तद्दिने यन्त्राग्रे शान्तिमुखं हवनं विप्रपार्श्वे कारयेत् । अनया युक्त्या यंत्रः प्रतिष्ठितो भवति । पश्चात् सदा साधारणमंत्रपूर्वकमष्टप्रकारपूजा कर्तव्या । यतिना भावपूजाविधि कार्या । ॐ श्रीँ ह्रीँ ह्रौँ ह्रौ सः अनेन मंत्रेण सदा पूजनीयः । पूजां कुरुते सुखी भवति । विश्ववल्लभो भवति । इति परमेष्टिबीजपंचकस्थापनाविधिः ॥
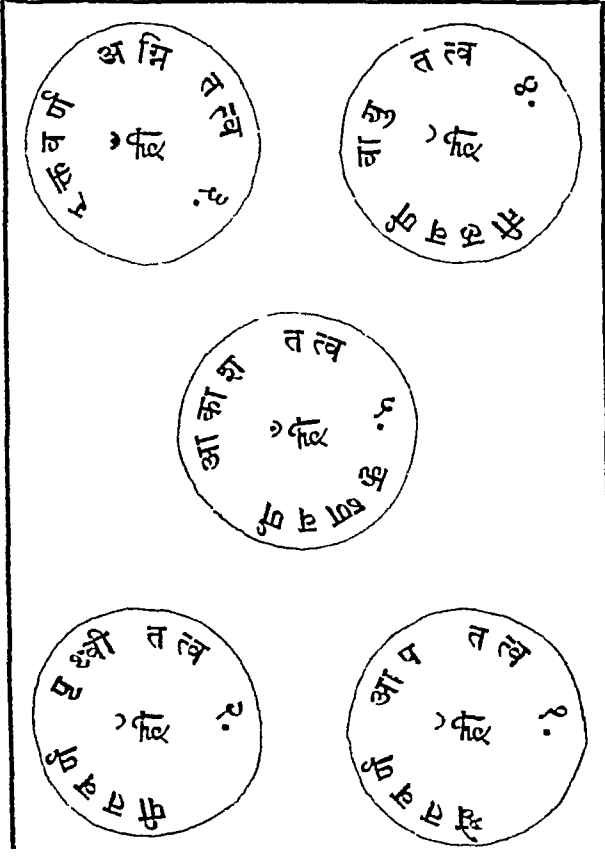
प्रथमं श्वेतबीजं अप्तत्त्वरूपं ब्रह्माधिष्ठितं अश्विनीनक्षत्रे रविवारे पूर्वदिशि उपविश्यते, गोमयेन भूमिशुद्धिः कुर्यात् भूम्योपरि चंदनस्वस्तिकं कृत्वा तदुपरि उज्वलवस्त्रं घटिं कृत्वा मुच्यते । तस्योपरि यंत्रः स्थाप्यते । शतपत्रादि श्वेतपुष्पमानीय १०८ संख्यया । कर्पूरचंदनेनार्चयेत् । अष्टोत्तरशतजापपूर्वं पुष्पैः श्वेतध्यानेनार्चयेत् । तावता धूपादि अखंड क्रियते । पश्चात् नैवेद्य अक्षत पूगीफलादि पंचोपचारपूजा क्रियते । “ ह्रीँ शुक्लध्यानेन कर्मक्षयं कुरु कुरु ” .इदं पूजामंत्रं । मृगचर्मश्वेतकंवलकादौ उपविश्यते । श्वेतवस्त्रपरिधापनं । श्वेतयज्ञोपवीतं कंठे धार्येत । श्वेतजपमालिका मौक्तिकमयी कारयेत्, स्फटिकमयी वा शंखमयी क्रियते । सहस्रमायाबीजं पागत्या जपेत् । एकभुक्तं, भूमिशयनं, ब्रह्मचर्यादिक्रिया क्रियते । अनया युक्त्या दश दिनानि विधिः करणीयः । पश्चात् हस्तनक्षत्रे रात्रौ हवनं । पूर्णचंद्रवर्तुलाकारकुंडं द्वादशांगुलसमवृत्तं षोडशांगुलनिम्नं कार्यं ।

तदनुशतपत्रादि सहस्र १००० पुष्पमानीयते । घृत मधु दधि शर्करा दुग्ध एतत्पंचामृतं एकत्र क्रियते । पश्चाद् बिल्वपत्र सहस्र १००० मानीयते । एकपत्रं बिल्वपत्र पंचामृतेन भृत्वा उपरिशतपत्रमेकं मुक्त्वा मंत्रोच्चारणपूर्वकं होमयेत् । अनया युक्त्या सहस्रं हवनं, पश्चात् १०८ कर्पूरखंडान् मंत्रोच्चारणपूर्वकं होमयेत् । अनया युक्त्या पूर्णाहुत्या नालिकेरफलं घृतेन भृत्वा होमयेत् । पिप्पलकाष्टसमिधमानयेत् " ह्रीँ दुःकर्म छेदय छेदय स्वाहाः " अयं हवनमंत्रः ॥

॥ इति परमेष्टिचक्रे शुक्लमायाबीजसाधनविधि संपूर्णम् ॥ विधियुक्त्या सिद्धिः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयं रक्तबीजं अग्नितत्त्वरूपं विष्णुनाधिष्ठितं । मृगशीर्ष नक्षत्रे रविवारे उत्तरदिश्यामुपविश्यते । गोमयेन भूमिशुद्धिः कुर्यात् । तदुपरि कुंकुमस्वस्तिकं कृत्वा आरक्तवस्त्रस्य घटिकां कृत्वा मुच्यते । तस्योपरि यंत्रः स्थाप्यते । रक्तकणयरपुष्पा १०८ ण्यानीयते । सिंदूरकर्पूरचंदनेनार्चयेत् । अष्टोत्तरशतमंत्रजापपूर्वकं रक्तध्यानेनार्चयेत् । धूपादि पंचोपचारेण पूर्वविधिना पूजा कर्तव्या, । " ह्रीँ आकृष्टि विश्ववश्यं कुरु कुरु स्वाहाः " इति पूजामंत्रः । रक्तकंबलिकायां उपविश्यते । रक्तवस्त्रपरिधानं रक्तसूत्रतंतूल्यां यज्ञोपवीतं कंठे धार्यते । आरक्त जपमालिका । विद्रुमरूद्रक्षया रक्तचंदनबीजयक्रिया ते सहस्र १००० माया जपेत् । एकभुक्तिभूमिशयनं ब्रह्मचर्यादि क्रिया । अनया युक्त्या दश दिनानि विधिः करणीयः । पश्चान्मूलनक्षत्रे रात्रौ हवनं । त्रिकोणकुंड एकैककोणे अष्टांगुलप्रमाणं द्वादशांगुलनिम्नं कार्यं । तदनु जपाकुसुम वा रक्तकुसुम सहस्रमेकमानीयते । पंचामृतयोगः । पूर्वविधिना बिल्वपत्रसहस्रमानीयते । एक पत्रस्य वेउलस्य पंचामृतैर्भृत्वा एकरक्तपुष्पं उपरि मुक्त्वा मंत्रोच्चारणपूर्वकं होमयेत् । अनया युक्त्या सहस्रमेकं हवनं । पश्चादष्टोतरशत गुग्गलगुटिकान् मंत्रोच्चा-

रणपूर्वकं होमयेत् । पूर्णाहुत्या जंबीरफलकपासअष्ट (होमयेत्) । " ह्रीं त्रैलोक्यवश्यं स्वाहा " इति हवनमन्त्रम् ।

॥ इति परमेष्ठिचक्र आरक्तमायाबीज साधनविधिः ॥ २ ॥

अथ तृतीयं पीतबीजं पृथ्वीतत्त्वरूपं विष्णुनाधिष्ठितं तत्स्वरूप साधनविधिः—पुष्यनक्षत्रे रविवारे इशानदिशायामुप-
विश्यते । गोमयेन भूमिशुद्धि कुर्यात् । भूम्युपरि कंकुमस्वस्तिकं कृत्वा [पीतवस्त्रस्य घटिकां कृत्वा] मुच्यते । तस्योपरियन्त्रः
स्थाप्यते । चंपकादि पीतपुष्पाणि १०८ आनीयते । कर्पूरकुंकुमचंदनेनार्च्यते । अष्टोत्तरशतमंत्रजापपूर्वं पुष्पैः पीतध्याने-
नार्च्यते । धूपदीपपंचोपचारेण विधिना पूजा कर्त्तव्या । " ह्रीं श्रीं कमलालक्ष्मीं कुरु कुरु स्वाहाः " इति पूजाविधि मन्त्रः ।
पीतवर्णआसने उपविश्यते । पीतवस्त्रपरिधानं पीतसूत्रतंतुत्रयस्य यज्ञोपवीतं कंठे धार्यते । पीतजपमालिका । पुष्पराज
मया मणीमय वा पतजीवा क्रियते । जाप सहस्र १००० मायाबीज अजपागत्या जपेत् । एकभक्त भूमिशयनं ब्रह्मचर्यादि
क्रिया कार्या । अनया युक्त्या दशदिनानि विधिः कार्यः । पश्चान्मूलनक्षत्रे रात्रौ हवनं क्रियते । द्वादशांगुलसमचतुरस्रं
षोडशांगुलनिम्नं कुंडं कुर्यात् । तदनुसहस्रमेकं चंपकपुष्पाण्यानीयते । वाऽन्यानि पीतपुष्पाणि । पंचामृतपूर्वविधिर्मेलनीयः ।
पश्चात् सहस्रमेकमानीयते बिल्वपत्राणां । एकं बिल्वपत्रं पंचामृतेन भृत्वा एकं पीतपुष्पमुपरि मुक्त्वा होमयेत् । अनया युक्त्या
सहस्रमेकं होमयेत् । पश्चादष्टोत्तरशतगौराचनखंडानि मंत्रोच्चारपूर्वकं होमयेत् । पूर्णाहुत्या एकं श्रीफलं होमयेत् । अनया
युक्त्या पलाशवृक्षसंबंध्यानयेत् (पलाशकाष्टमानयेत्) । " ह्रीं श्रीं कमला भव भव स्वाहा । अयं हवनमंत्रः । "

॥ इति परमेष्ठिचक्रे पीतमायाबीजसाधनविधिः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थं नीलबीजं वायुतत्त्वरूपं रुद्रेणाधिष्ठितं तत्स्वरूपं कथ्यते । उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रे रविवारे वायव्यदिशायां उपविश्यते । गोमयेन भूमिशुद्धिं कुर्यात् । तदुपरि नीलवस्त्रं घटिकां कृत्वा मुच्यते । तस्योपरि यंत्रः स्थाप्यते । जातिपुष्प-कलिकाप्रमुख नीलपुष्पाणि १०८ आनीयते । कर्पूरजंगालचंदनेनार्च्यते । अष्टोत्तरशतमंत्रजापपूर्वपुष्पैर्नीलध्यानेनार्चयेत् । धूपदीपपंचोपचारविधिना पूजयेत् । ह्रीँ मातंगिनी शत्रूणां उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा । इति पूजामंत्रः । नीलवस्त्रस्यासने उपविश्यते । एकभुक्ति भूमिशयनं ब्रह्मचर्यादिक्रिया कार्या । अनया युक्त्या दश दिनानि विधिः कार्यः । पश्चात् श्रवण-नक्षत्रे रात्रौ हवनं । दीर्घकुंडं अष्टादशांगुलप्रमाणं षोडशांगुलविस्तीर्णं द्वादशांगुलनिम्नं कारयेत् । तदनु सहस्रमेकं पुष्पाणि नीलानि पुष्पजातिकलिकानि आनयेत् । पंचामृतं पूर्वयुक्त्या मेलयेत् । पश्चात् सहस्रमेकं बिल्वपत्राण्यानीय एकं पत्रं पंचामृतेन भृत्वा नीलपुष्पमुपरि मुक्त्वा होमयेत् मंत्रोच्चारपूर्वकं । अनया युक्त्या सहस्रमेकं होमयेत् । पश्चादष्टोत्तरशतमृगमद-खंडानि मंत्रोच्चारणपूर्वकं होमयेत् । पूर्णाहुत्या एकं कदलीफलं होमयेत् । " ह्रीँ ह्वा मातंगिनी शत्रूनुच्चाटय उच्चाटय स्वाहाः इति हवनमंत्रः ॥

॥ इति परमेष्ठिचक्रे नीलमायाबीजसाधनविधिः ॥ ४ ॥

अथ पंचमं कृष्णबीजं आकाशतत्त्वस्वरूपं रुद्रेणाधिष्ठितं तत्स्वरूपं–विशाखानक्षत्रे रविवारे दक्षिणदिशायां उपविश्यते । गोमयेन भूमिशुद्धिं कुर्यात् । भूम्युपरि कोयलाचूर्णेन स्वस्तिकं क्रियते । तदुपरि कृष्णवस्त्रं घटिकां कृत्वा मुच्यते । तस्योपरि यंत्रः स्थाप्यते । पश्चात् कृष्णराइ (राजिका) गिरिकर्णिकादीनि यानि कृष्णानि पुष्पाणि प्राप्यंते तानि अष्टोत्तरशत

मंत्रं जपेः (मंत्र–जापपूर्वं) कज्जलकर्पूरचंदनेनार्च्यते। अष्टोत्तरशतमंत्रजापपूर्वक कृष्णध्यानेनार्चयेत्। दीपधूपपंचोपचारेण पूजा कर्तव्या। " ह्रीँ ज्वालामालिनी शत्रून् मारय मारय स्वाहाः " अयं पूजामंत्रः। कृष्णवस्त्रस्यासने उपविश्य कृष्णवस्त्र-परिधानं, कृष्णसूत्रतंतुपंचभिर्यज्ञोपवीतं कंठे धार्यते। कृष्णजपमालिका च अरिष्टमयी क्रियते कृष्णमाला। सहस्र मायावीज अजपागत्या जपेत्। एकभक्तं भूमिशयनं ब्रह्मचर्यं। एवं दशदिनानि विधिः (कार्या). । पश्चात् रेवतिनक्षत्रे रात्रौ हवनं। अर्धचंद्रकुंडं मध्ये दशांगुलविस्तीर्णं चतुर्दशांगुल निम्नं कार्यं। तदनु सहस्रमेकं कृष्णगिरिकर्णिकापुष्पाणि कृष्णानि आनीयते। पंचामृतेन भृत्वा पूर्वविधिर्मेलनीयः। सहस्रमेकं मंत्रोच्चारपूर्वकं होमयत्। एकं पत्रं विल्वस्य पंचामृतेन भृत्वा एकं कृष्ण-पुष्पमुपरि मुक्त्वा होमयेत्। " ह्रीँ सः ज्वालामालिनि शत्रून् मारय मारय स्वाहाः " अयं हवनमंत्रः॥

॥ इति श्रीपरमेष्टिचक्रे कृष्णमायावीजसाधनविधिः॥ ९ ॥

अनया युक्त्या पंचरूपपरमेष्टियंत्रः सिद्धो भवति। योऽनया युक्त्या उपासिंत करोति स साधको दिव्यजो भवति, विश्व-वल्लभो भवति, विपुलश्रीमान् स्यात्, संतानवृद्धिः स्यात्, शरीरपुष्टो भवति। योऽनया युक्त्या भव्यं श्रीजिनेन्द्रभाषितं नित्यशः कुंकुम कर्पूर कस्तूरिका चंदन कृष्णागरु पंचसुरभिद्रव्यैः गुटिका कार्या। दिनप्रति ते सुगंधिद्रव्यैः पूज्यते वार १०८, " ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं (क्लीं) ध्वांसः " अनेन मंत्रेण सदा पूजनीयः। साधारणमंत्रेण शान्त्यर्थं विद्यार्थं कर्मक्षयार्थं। श्वेतवीज-ध्यानेन तत्काल फलं भवति, तथा कथ्यते—प्रथम दिनपूजा साधारणमंत्रेण कार्या। पश्चात् श्वेतपुष्पैः १०८ अजपागत्या शुक्लवीजं पूजयेत्। कार्योत्पन्ने सति मंत्रेण मंत्रमध्ये यत्कार्यं भवति। शान्त्यर्थं शान्ति कुरु कुरु। विद्यार्थं विद्यां कुरु कुरु।

कर्मक्षयार्थं कर्मक्षयं कुरु कुरु। इति मंत्रमध्ये कथयेत्। ॐ ह्रीं अमुकं कुरु कुरु, इति उत्पन्नो मंत्रो शुक्लबीजस्य ॥ १ ॥

वश्यार्थं रक्तबीजं, अष्टोत्तरशतरक्तपुष्पै अजपागत्या रक्तबीजं पूयेत् यंत्रमध्ये साधनायामुच्चारो विधेयः राजानं वश्यार्थ ७ दिनानि। स्त्रीणां पंचदिनानि। इतरलोकानां ३ दिन। "ॐ ह्रीं अमुकं वश्याकृष्टिं कुरु कुरु" इति कार्योत्पन्नमंत्रे रक्तबीजस्य।

तया युक्त्या पीतबीजं पीतपुष्पैरर्चयेत्। सप्तदिनैस्तस्करगृहितधनमागच्छति। पंचभिर्दिवसै भूमिगतलक्ष्मीं प्राप्नोति। त्रिभिर्दिनै ऋणधनं प्राप्यते। "ॐ ह्रीं श्रीं श्रुं श्रः अमुकलक्ष्मीं सन्मुखं कुरु कुरु" इति कार्योत्पन्ने पीतबीजस्य मंत्रः। ३ ॥ ३ ॥

तया युकत्या नीलपुष्पै १०८ उच्चाटनमंत्रं जपेत्। राजामंत्री दिन ७, स्त्रीदिन ३, इतरलोके दिन ३। ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रीं ह्रूं ह्रः अमुकस्य उच्चाटय उच्चाटय। उच्चाटनं भवति ॥ तस्यैव शान्त्यर्थं मन्त्रमध्ये "शान्ति कुरु कुरु"। दुग्धप्रक्षालयेत् १०८ जापेन शान्तिः स्यात् ॥ ४ ॥

तया युकत्या कृष्णपुष्पैरष्टोत्तरशतैर्मारणमंत्रं जपेत्। राजा मंत्री दिन ७। स्त्री दिन ३। इतराणां दिन ३। ॐ ह्रीं क्षाँ क्षीं क्षूं क्षः अमुकं मारय मारय। (इति) मारणमंत्रः। शान्त्यर्थं मंत्रमध्ये शान्ति कुरु कुरु" १०८ जापेन स्वस्थो मारणोत्पन्नमंत्रं संतानार्थं परमेष्ठियंत्रं पंचोपचारेण पूजनीयं। यदा स्त्री पुष्पवती स्यात्, तदा दिनत्रयस्नानानन्तरं वार १०८ जलचलुकैर्मंत्रोच्चारणपूर्वकं स्नापयेत्। तं नीरं अनया एव युक्त्या पुष्पत्रयं यावत् दिनत्रयं स्त्रियाः पायते य भुक्षितायाः अनया युक्त्या स्नात्रोदकं भार्या पातव्यं, पश्चात् गर्भं धारयति। "ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं क्षौं सः अमुकी गर्भं धारय धारय,

मृतवत्सागर्भं जीवय जीवय " (इति) कथ्यं । मासानन्तरं तस्या एव स्त्रीयाः अनया युक्त्या दिनत्रयं यंत्रोदकं पायते, पुत्रो भवति । मंत्रमध्ये कथ्यं " अमुकी पुत्रं धारय धारय " इति कथ्यं । यदा गर्भपीडा भवति तदाप्यतेनेनमंत्रेण दिनत्रयं स्नात्रौदकं देयं, मंत्रमध्ये कथ्यं " गर्भपीडा नाशय नाशय " । अश्लेषा मूल मध्ये यदा प्रसूतिः स्यात् तदा निधानं कथ्यते—स्त्रीयाः शरीरप्रमाणं २१ रक्तकुसुंभकसूत्रतंतवः कर्तव्याः । यंत्राग्रे अनेन मंत्रेण २१ ग्रंथिर्बंध्य एव चंदनेनार्चयेत्, धूपयित्वा स्त्रीकटौ धारयेत्, यावत् स दवरककटौ तावत् प्रसूतिनी छोटिते मोक्षः । ह्रीँ जूआरी जूए रमे, अंधा होइ अयाण । जोए अक्षर साचला, तांत चडे प्रमाण । अनेन मंत्रेण दवरकमभिमंत्रयेत् । ग्रंथी १० वार १०८ जपी कटी बध्यते । अधूरो जातो रहे ।

अथ यंत्राग्रे तैलवर्तिलिकाक्षि पीत्वा मंत्रेण वार १०८ मंत्रयेत् । यस्याः प्रसूतिर्न भवति तस्या उत्तरकरेण मर्दते । " ह्रीँ कलिकुंडस्वामिन् आगच्छ आगच्छ परनिद्यां छेदय छेदय " अनेन मंत्रेण तैलमंत्रं (तैलं) मंत्रयेत् यस्या तउडं भवति तस्या नामकृत्वा सप्त दिनानि यंत्रं पूजयेत् । स्नात्रौदके न सह वृद्धदेवदारु घर्षयित्वा मध्ये दीयते, उदरोपरि लेप एव, गर्भवृद्धिः स्यात् । यस्य रात्रेऽकार्यो उपक्रमो विधीयते-प्रथम एकरात्रौ यंत्रस्य महापूजां कृत्वा सहस्रमेकं बीजसाधारणमंत्रेण जपेत् । तत्रैव शयने रात्रौ स्वप्नेद्वादेशं स्वप्नं ददाति तदा उपक्रमः कार्यः, यदा न ददाति तदा उपक्रमो न विधेयः ।

चौरभयरक्षा कथ्यते—ॐ ह्रीँ आदि चौर कपिल्लस्य, ब्रह्मलब्ध वरश्च मः । तस्य स्मरणामात्रेण, चौरो गच्छतु निष्फलः ॥ २ ॥ ह्रीँ कपिल्ल ३ वारत्रयं ३ ताली दीयते, चौरभयं न भवति । ॐ सप्पह चौरह मुसहहा, त्रिहुं दा . नद्य ।

नागकुमारे भासियुं, रक्खउ पारसनाथ । जः जः जः ताली ३ देवी, (इति) सर्पचौरमंत्रः । ह्रीँ पद्मे पद्मकटिनी नमः, हृदि स्ववस्त्र धृत्वा वार २१ अभिमंत्रयेत् । सर्पादिदुष्टकीटकभयं न भवति । अनेन मंत्रेण एक सहस्रवारं (जपित्वा) स्नापयेत्, तदा उदकं मध्ये दीयते शरीरे छंट्यते, तस्य सर्व स्थावरजंगमविषं याति । ह्रीँ जः जः जः सर्वज्वरं नाशय नाशय, अष्टोत्तरशत वारं अनेन मंत्रेण जप्यते, पानीयमध्ये एकं दीयते, वेलाज्वरं नाशयति । द्विदिने, एकान्तरज्वरं त्रिदिने, तृतीयज्वरं सप्तदिने । वातपित्तकफश्लेष्मसर्वज्वरं नाशयति । मयूरशिखा लज्जालु सहदेवी पुष्यार्के गृहित्वा यंत्राग्रे पूजयित्वा साधारण मंत्रेण १०८ वार पूजयेत् । मयूरशिखा मस्तके धार्यते । शाकिन्यादि द्रष्टिदोषं न स्यात् । सर्वरोगादि क्षुद्रदोषा यान्ति । कंठे लज्जालु ग्रहशान्त्यर्थं स्थापयेत् । कट्यां सहदेवी रोगोपद्रववश्यार्थं स्थाप्यते । यंत्राग्रे १०८ गुग्गलगुटिका साधारण मंत्रेण मंत्रयित्वा होमयेत् । सा रक्षा रोगिणो मध्ये दीयते, सर्वरोगक्षुद्रदोषा नश्यन्ति । भोजनानन्तरं वारत्रयं दक्षिणहस्तेनोदरं मंत्रयेत् ।

ह्रीँ वातोऽपि भक्षितो येन, पीतो येन महोदधिः । समुद्रः रोषितो येन, तमगस्तिं प्रणम्यते ॥ १ ॥

अनेनाभिमंत्रयेत् । परचक्रभये मुख्यनृपमुद्दिश्यैकरात्रौ पूर्वयुक्त्या पंचहवनं कार्यं । सा रक्षा च दिशानां मुखे उदकेन सार्द्धं दीयते । यंत्रद्वयं कृत्वा जयपताकायां आत्मकटकं उभयोः पार्श्वयोः स्थाप्यते, स वादित्रारावश्रवणेन पताकादर्शनेन एव परचक्रं नाशयति । यंत्राग्रे कंठप्रमाणगर्त्ता क्रियते रक्तपुष्प अनया युक्त्या दिनं प्रति सहस्रमेकं जपेत् । ह्रीँ अमुकं बंदि-मोक्षं कुरु कुरु । सप्तदिनैरेवं कृते बंदिमोक्षो भवति । मास १ बेडी छुटयति । १४ दिनकृते स हि त्रिमासधृत छुटयति ।

अथ वश्ययंत्रविधिः—पट्कोणयंत्र कीजै, पट्कोणे मायाबीजानि, मध्ये, साध्यं नामसहितं। इदं यंत्रं कुंकुम गौरोचन कस्तूरि काकनिष्टांगुलि रुधिरेण भूर्जे लिख्यते। जातिलेखिनीं कुमारिसूत्रेण वेष्टयेत्। पश्चात् परमेष्टि मुख्ययंत्राग्रे वार १०८ साधारणमंत्रेण अभिमंत्रयेत्। पंचमधु ताम्रेण मटाप्य घृतमधुसहितं समीपे स्थाप्यते, महावश्यं स्यात्। एकामन्यां युक्तिं वक्ष्यामि—मोक्षार्थं साधनाय पंचकोणयंत्रः क्रियते। इदं यंत्रं श्वेतोज्वलेन कागदेन पंचवर्ण पंचरूपो ह्रींकार पंचतत्त्वसहितो लिख्यते। मध्ये जिनमूर्त्तिं लिखेत्। परमेष्टिमुख्ययंत्राग्रे मुक्त्वा वार १०८ साधारण मंत्रेण अभिमंत्रयेत्, इति प्रतिष्ठा। पश्चात् दृष्टिं जिनस्योपरि कृत्वा अरिहंताणं इत्यादि पंचपदानि यो गुणयेत् लक्षमेकं सः तीर्थंकरगोत्रं बध्नाति, मुक्तिरुया वल्लभो भवति। सर्वपापरहितो भवति। अन्यपरिणाम तात्कालिक कविः।

अथ विशेषः कथ्यते—प्रथमं शुक्लबीजं कर्मक्षयार्थं कथ्यते—पंचपरमेष्टियंत्रं श्वेतवस्त्रस्योपरि मुच्यते, कर्पूरेणार्चयेत्। तस्योपरि स्वदृष्टिं स्थाप्य मानसेन कुंडलिनि उत्परि मायाबीजं स्थाप्य १०८ साधारण मंत्रेण बीजं जपेत्। अहोरात्रकृतं पापं याति। अनया युक्त्या त्रिदिनं शुक्लध्यानयुतो जपेत्। सहस्रमेकं। सकृत्जन्मपापं गच्छति। तथा भ्रूमध्ये ज्ञानदीपं कृत्वा तस्य मध्ये मायाबीजं जपेत्। एवं सप्तदिनानि यः करोति तस्य जन्मान्तरपापं गच्छति। अनया युक्त्वा त्रिदिनं सूर्यसमं बीजं नाभिमध्यजले जपेत् तस्य रविपीडा न स्यात् ॥ १ ॥ अनया युक्त्या द्वितीयचक्रे अष्टोत्तरशतजापमात्रेण शशिपीडा न भवति ॥ २ ॥ तृतीयचक्रे तप्तांगार सदृशं मायाबीजं १०८ जपेत्। भौमपीडा न भवति ॥ ३ ॥ चतुर्थचक्रे पाचिनिभंबीजं जपेत् १०८, बुधपीडा शान्तिः ॥ ४ ॥ पंचमचक्रे पुष्पराजनिभं बीजं जपेत् १०८, मासमात्रं, गुरुपीडा याति ॥ ५ ॥

षष्ठचक्रे मुक्ताफलनिभं १०८ जपेत्, शुक्रपीडा न स्यात् ॥ ६ ॥ भूमध्ये नीलकरत्ननिभं बीजं दिनप्रति त्रिकालं १०८ जपेत्, दिन ४९, तस्य शनिपीडा न स्यात् ॥ ७ ॥ अनया युक्त्या मालतिबकुलवैडुर्यनिभं मायाबीजं १०८ जपेत्, मासं यावत्, केतुपीडा न स्यात् ॥ ८ ॥

परमेष्ठिचक्रस्योपरि आकाशबीजं जपेत् १०८, एक दिने अन्नादि दोषदृष्टिं नाश-

॥ १४ ॥
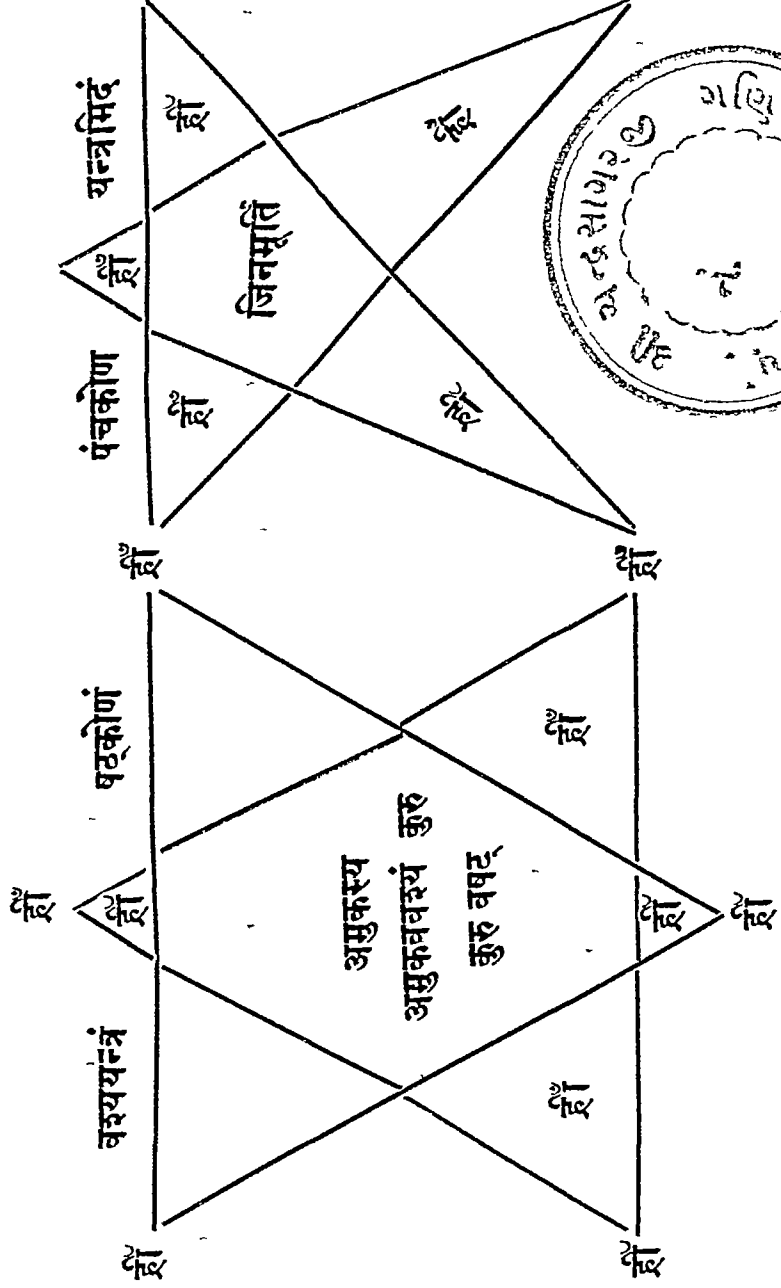
यति । द्विदिने झौंटिकां पीडां नाशयति । त्रिदिने भूतपीडां नाशयति । चतुर्दिने डाकिनिपीडां नाशयति । पंचमदिने शाकिनिपीडां नाशयति । अनया युक्त्या दिन २१ समस्तोपद्रवा यान्ति । दिनप्रति १०८ जपेत्, महाकर्मणादि नश्यति ॥ तथा मालतिमुकुलाग्रे पंचवर्णबीजं स्थापयेत् । दिनप्रति मगहार मध्ये जपेत् यव रक्षित्वा दिनानि तस्य जडत्वं प्रयाति । महाबुद्धिवान् भवति । अनया युक्त्या मालतिकुसुमाग्रे पंचवर्णबीजं ध्यायेत् । दिनप्रति १०८ जपेत् । तस्य कवित्वबुद्धिः स्यात् । तेजस्वी प्रभा भवति । ॥ इति शुक्लध्यानविधि ॥ १ ॥

अथ रक्तबीजं वश्यार्थे । कुंकुमकेसरकर्पूरकस्तूरिं समभागं कृत्वा गुटिका क्रियते सा गुटिका संघृष्य मध्ये वार १०८ जपेत् कार्योत्पत्तौ । मंत्रेण साध्यनाम लिखित्वा तिलकं कारयेत् । यः पश्यति स वशी भवति । परमेष्टिचक्रे उत्तरस्यां धारयेत् । पूर्वयुक्त्या रक्तोपचारेण दिनप्रति कार्योत्पन्नमंत्रः—" ॐ ह्रीँ अमुकं वश्यं कुरु कुरु " सहस्रमेकं जपेत् साध्यनाम सहितं । सप्तदिनैः कृते राजा च मंत्री वशी भवति । षट्दिनै राजवनिता वशी भवति । पंचभिर्दिनै महाराज्यमान्यो भवति । चतुर्भिर्दिनै नागरिकलोकप्रमुखो वशी भवति । त्रिदिनैः स्त्रियो वशी भवति । द्वाभ्यां शत्रवो वशी भवन्ति । एकेन दिनेन गुरवो वशी भवन्ति ।

॥ **अथ आकर्षण विधिर्लिख्यते**— ॥ पूर्वयुक्त्या यंत्रास्याग्रे त्रिकोणकुंडं कृत्वा पूर्वरक्तोपचारेण कार्योत्पन्नमंत्रेण सप्तदिनानि हवनं क्रियते, महादेव्या आकर्षणं (भवति)। षट्दिनहवनेन भूतप्रेतशाकिनी प्रमुखा गच्छन्ति । पंचदिनेन गणेशक्षेत्रपालचेटकादिनां कर्षयति चतुर्भिर्दिनैः योगिनीं आकर्षयति । त्रिभिर्दिनैः राजस्त्रिया आकर्पणं । द्विदिनेन प्रजाकुल-

स्त्रीणामाकर्षणं । एकदिन हवनेन कुमारिकां आकर्षयति ॥ इति वश्यार्थं रक्तबीजाधिकारः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयबीजाधिकारः श्रेयोऽर्थं कथ्यते— ॥ पीतबीजपरमेष्ठियंत्रस्याग्रे ईशानदिशि सन्मुखं यंत्रं स्थापयेत्, पूर्वोक्तविधिना पीतजपमाला सहस्रं जपेत् । दिनप्रति त्रिकालं कार्योत्पन्ने स्वपनीव्रतस्थः पण्मासं जपेत्, तस्य श्रीलाभो भवति, जन्मदल ह्रीँ लक्ष्मीवान् । तस्य वंशे द्रारिद्र्यं न स्यात् । अनया युक्त्या मासत्रितयं जपेत्, राज्यप्राप्तिः स्यात् । द्विमासे मंत्रीभवति । पंचभिर्दिनै स्थापनमुक्तलक्ष्मी आगच्छति । त्रिभिर्दिनै गोत्रगत लक्ष्मी वृद्धिं प्राप्नोति । यंत्रस्याग्रे सहस्रमेकं १००० अक्षततंदूलकुंकुमगोरोचनै र्ये तंदूलाः पीताः कृताः । (तै) बीजमंत्रं पूजयेत् । यत्र निधिशंकास्थानं स्यात् तत्र क्षिप्यते, यत्र विवर्णतंदूला दृश्यन्ते तत्र निश्चितं निधिः । तथा यंत्रस्याग्रे कुंकुमादि पीतद्रव्यैः षट्कोणयंत्रं लिखेत् । षट् ह्रीँकार मध्ये, गर्भे शत्रुप्रतिकृतिः, तस्य हृदये बीजं, पादाधः स्तंभय परिधा स्तंभय २, इति पूजा । द्वारे कार्योत्पन्नमंत्रेण १०८ पूज्येत्, पीतपुष्पेन । अथ साधनमंत्रः—अंगुल ८ कीलकः शत्रुमुखे क्षेपयेत् । अनया युक्त्या राजानं सप्तदिनानि, मंत्रेण, षट् दिनानि दुर्गाधिपं, पंचदिनानि नगरमहत्तरं, चतुर्दिनानि त्रिदिनं सर्वास्त्रियः, एकाद्वाभ्यां सर्वे इतरलोकाः इति स्तंभयति ।

॥ इति पीतबीजाधिकारः ॥ ३ ॥

॥ अथ मायाबीजं नीलं उच्चाटनार्थं कथ्यते— ॥ परमेष्ठियंत्रं वायव्यदिशायां स्थाप्य पूर्वयुक्त्या नीलोपचारेण पूजयेत्। राजानां वा राजस्त्रियाणां कार्ये राजद्वारमृत्तिकामानीयते । प्रधानार्थे प्रधान (द्वार) मृत्तिकां । शेषाणां मनुष्याणां वामपादधूलिमानीयते । यंत्रस्याग्रे पट्टकोपरिमुच्यते । तन्मृत्तिकामध्ये बीजसहितं शत्रुनाम लिख्यते । अष्टोत्तरशतेन मंत्रेण

कार्ये (कार्योत्पन्ने) अभिमंत्रयेत् । पश्चादर्कदुग्धेन मृत्तिकापिंडं कृत्वा शत्रुमूर्त्तिः सावयवा लिखेत् । सा मूर्तिर्नीलोपचारेण धूप-दीपनैवेद्यसहितं अर्चयेत् । राजार्थे सप्तदिनानि अर्चयेत् । मंत्र्यर्थे षट्दिनानि । राजस्त्रियार्थे पंचदिनानि । दुर्गपालार्थे चतुर्दिनानि । अन्येषामर्थे त्रिदिनानि पूजयेत् । पश्चात् राज्ञः कार्ये तत्फलकं राजद्वारे निक्षिपेत् । मंत्रिणः कार्ये मंत्रिद्वारे । अन्येषां कार्ये तत्र निक्षिपेत् । यत्र (यस्य) साध्यपदेन तं परिमृशति तस्य महान् उद्वेगो भवति, महारोगादि पीडितो भवति । शान्त्यर्थं तां निष्कास्य खंडीकृत्वा कूपादौ क्षिप्यते उभयोर्मित्रविरोधार्थं । द्वे अर्कपत्रे आनीयते । परमेष्टियंत्रस्याग्रे मुक्त्वा नीलोपचारेण यंत्रं पूजयेत् । पश्चात् स्नुहिदुग्धेन द्वयोः पत्रयोः मूर्तिर्लिखेत् । पश्चात् । द्वे पत्रे एकत्र कृत्वा नीलोपचारेण पूजयेत् । सहस्रमेकं कार्योत्पन्नमंत्रेण मूर्तिमस्तके मायाबीजं । पादाधो द्वेषय द्वेषय इति लिखेत् । एकत्र कृत्वा सूत्रेण वेष्टयेत् । सहस्रजापेन पूजयेत् । पश्चात् पृथक् कृत्वा त्रिपथे क्षेपयेत्, महान् विरोधो भवति। उद्धृत्य च एकत्र कृत्वा शतपुष्पेन त्रिदिनं पूजयेत्, मा पुनरपि प्रीतिः स्यात् ॥

इति परमेष्टिचक्रे नीलबीजध्यानविधिः चतुर्थः ॥ ४ ॥

॥ अथ कृष्ण आकाश कृष्णआकाशतत्त्वबीजं कृष्णमारणार्थं कथ्यते–॥ मृत्युअर्थयोगे पलासपिप्पलौ यत्र एकत्र भवतः तत्र प्रथमदिने निमंत्र्य द्वितीयदिने नग्नीभूय च मौनी द्वयोरेकत्रमष्टखंडं द्वादशांगुलप्रमाणं गृह्यते । द्वादशांगुलदीर्घं षडंगुल पृथु त्र्यंगुलपिंडा पट्टिका कारयेत् । पश्चात् रवौ कुमारिका स्मशानात् कोयला समानीयंते । तानर्कदुग्धेन घर्षयेत् । अनया मष्या शत्रुप्रतिकृतिं पट्टिकोपरि लिखेत् । तस्य मूर्तिमस्तके ह्रीँकारं लिखेत् । उभयपार्श्वयोः द्वादश बीजानि लिख्यन्ते । पट्टिका-

पिंडे द्वयोः पार्श्वयोर्द्वादिश द्वादश, पृष्ठे द्वादश पट्टिकाया लिखेत्। तस्य चरणतले मारय मारय शब्दं लिखेत्। तां पट्टिकां मुख्ययंत्राग्रे सहस्रमेकं १००० दिनप्रति उत्पन्नकार्येण मंत्रेण जपेत् सदा दिनानि। पश्चात् स्मशानमध्ये यग्रते। पश्चात् दिनप्रति कर बे वारि भृत्वा मायाबीजसहितं मारय मारय शब्दं लिखेत्। इति मंत्रेण वार १०८ जपेत्। तत्पट्टिकोपरि सिंचयेत्। अनया युक्त्या २१ दिनानन्तरं रोगोत्पतिर्महती स्यात्। सन्निपातज्वरं भंगं वातपित्तश्लेष्मादिरोगा भवन्ति। एषा युक्ति चेत् एक मासं क्रियते तदा राज्ञो मरणं। मंत्रिणः पंचमासान्। दुर्गपालाय ४ मास। राजमान्या दूतपुरुषाः त्रयो मासाः। शेषाणां द्विमासौ कृष्णमारणं स्यात् ॥ शान्तिकं कथयामि—तं तु यंत्रं ततो निष्कास्य दुग्धेनाभिमंत्रयेत्। "ह्रीँ अमुकस्य शान्ति कुरु कुरु" वार १०८ जपेत्। तावद्भिर्दिनैः पुनरारोग्यं भवति।

श्री शक्तिना सोदरभावयुक्त्या, तं पापहं स्तौमि विधानद्रश्यं।
श्री खेचरीदत्तमहाप्रसादो, माया (याः) कल्पं विविधं चकार ॥ १ ॥
द्वितीय चतुर्थपदे, कविनामस्त्रगोपितं। सुसाधकेन सुध्यानं, कर्तव्यं कर्म्मनाशनं ॥ २ ॥

ऑँ नमो अरिहंताणं। ऑँ नमो सिद्धाणं। ऑँ नमो आयरियाणं। ऑँ नमो उवज्झायाणं। ऑँ नमो लोए सवसाहूणं। अँ इँ ऑँ नमो भगवइए सुयदेवयाए बारसांगजणणीए सरस्सइए सच्चवाइणीए सुवन्नवन्नो कुरयर। २।. देवी मे शरीरं पविस्स पुच्छतस्स संमुहं पविस्स, सवजणमयहरिए, अरिहंतसिरिए, सम्यग्दर्शनचारित्राणां [सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि]

मोक्षमार्गः, एषा मयूरवाहिनीविद्या ३६००० पर्युषणा पर्वणि दीपाल्यां चतुर्मासेषु साधनीया वश्यं स्यात् ।

॥ इति श्री मायाबीजकल्पः संपूर्णः ॥

॥ अथ होम विधिर्लिख्यते— ॥ चतुरस्रकुंड बे हस्तप्रमाण कीजै, खदिरकाष्टनी अग्नि प्रगट कीजै, रक्त कणयर घृत मधुयुक्त एक सहस्र जेहने नाम होमिए, ते काष्ट न हुइ तो न थाय दासप्राय । ह्रीँ स्वाहाः अतितिलयवमधुघृतयुक्तं सहस्र १००० आहुति दीजै, तदा सरीर सुख हुवे, सरीरे उद्वेग न हुवै, । ते ह्रीँकार दहिं खांड मधु सुधो होमिए, विस्फोटक न होइ । तथा तिल मुंग उडद घृत सहस्रं, होमिए, गृहशान्तिर्भवति । तिलतेल मपान् मिश्रं कृत्वा पलाशकाष्ट होमयेत्, परचक्रं नाशयति । ते ह्रीँकार लवण राइ होमिए, पातालकन्यां आकर्षयेत् । कडवो तेल निंबपत्र होमिए सहस्र १, शत्रुनें ज्वर चढे ।

॥ इति होम विधि समाप्तः ॥

॥ ह्रीँकारविधानं कहै छै—॥ श्रीखंडचंदनेन कर्पूरमृगमदगोरोचनकेसरकुंकुमआरक्त कुसुम भागान् शुभदिने भुर्जपत्रे लिखिन्या ह्रीँकारं अष्टदलकमलमध्ये लिखित्वा तस्य मध्ये साध्यनाम अर्कपत्रे हलिद्रै लिंखित्वा अगयानी लेखणे लखिये, स्मशान गाडीयै, । जेहने नामे लिखिए तेहनी कार्यसिद्धि स्तंभन हुइ । निश्चै तां लगि स्थंभै जा क्षीरेण प्रक्षालयेत् ।, स्वस्थ हुवै ॥ ह्रीँकारविधानं—निंबना पाटीया बे, करावी काकपिच्छ लेखण करी, अश्वमहिषरक्तेन जे बिहुंने प्रीत हुइ तेहनो नाम लिखिए । पाखति रेखा त्रण करीए । पाटला संपुट भूमि मध्ये क्षेपिए, तु दिने वैरं भवति । वली विणजाणिते बिहुं पाटीया उपर ह्रीँकारं वेष्टय अग्नि समीपे दाटीए, ते बिहुने आदित्यवारे, तदा तयोर्विरोधो भवति, यावन्महिपिक्षीरेण चंदनेन

प्रक्षाल्यते ॥ ह्रींकारविधानं—स्मशानांगार खदिरकाष्टनो चउरंस आठ अंगुलप्रमाण एकेकी दिसे आठ आठ ह्रींकार लिखिये, । सर्वावयवसंयुक्तकृतां ह खीली कष्टंग खीलीए शत्रु खीलाय, मूर्छा पामे, विह्वल थाइ, संदेह उत्किलिते स्वस्थो भवति न संशयः

॥ इति ह्रींकारकल्पः ॥

लक्षजाप दशांगहोम अखंड चोखा वाटिये घृत मधु साकार ची जेवडी गोली सहस्र १ होमिये । पछे द्राख १, गीरी १, खंड १०८, खारेक १०८ बदाम १०८, घृत चौपडी होमिये । नालिकेरखंड १०८ आहुति दीजे ॥ इति श्री ह्रीं बीज साधन विधि ॥ प्रथम दिवालीने दिन उपवास करी रक्तवस्त्र पहेरिजैटां १।२ केसर घसी पूर्वदिसि बेसिए । जिण पाटले लोह नहि लागो होइ तिण पाटै बेसिये, पवित्रपणै थइ सोनारा पाणीको छांटो लेइ १२ अंगुलिनी लेखण अथवा डाभरी लेखणसुं थालि उपरि ह्रींकार गुरुविध युक्तो यंत्र लिखिये, च्यारे अक्षरसहित " ॐ क्रौं नमः " कर्पूरसुं लिखै कहिं लोह न राखै, मौनेन बाजोट उपर थाली मेलिये । संध्यावेला २–३ कर्पूरना वासक्षेप करी भला वस्त्रसुं ढांकियै । एतला वस्त्र विहार करी सांझै कीजै, पछे संध्यावेला रक्त वस्त्र पहैरी सन्मुख बेसी निश्चल थाय । आगै त्रिकोणकुंड करी अग्निमांहे खेपियै । " ॐ तेत्रीसक्रोड देवतामुखाय स्वाहाः " अनेनाग्निस्थापनं । पछे " खाडदेवतामुखाय स्वाहाः " अनेनाग्निस्थापनं । पछी खारेक ३ घृतसुं चोपडी वार ३ ह्रींकारसुं मंत्री मंत्री होमीयै । सोपारीखंड ३ साकर द्राखकदलीना खंड ३–३ होमियै । पछे रक्तमाला ३ फेरी टोइये । पछे यंत्र आगल सहस्र वार १२००० ॐ ह्रीं नमः गुणियै । नानाविध फुलफल नैवेद्यकर्पूरादि सुगंधद्रव्यै पूजै । दसांस हवनं खीर मेवा पंचामृत आहुति दीजै । पछे प्रांते यंत्रने पुटी १ माला १ जमी

भोगकरी दूध सेर १ पवित्रपणे घालि पखाल स्त्र पीत्वा गृहादिक मांडै पाणी पखाली छांटीये श्रेयमणी फलादिक खाय वा जावज्जीव दीवालीये ए विधि करिये। आम्नाय कुपात्रने न दीजै गुरुभक्तने दीजै आपदा टालै, मनोवांछित देवै, भवांत-गतिसुख लहै ॥

॥ इति श्री जिनदत्तसूरिजी प्रातःस्मरणा समाप्ता ॥

ह्रीँ लेखाकल्प लिख्यते—कृष्णाष्टम्यां अथवा चतुर्दश्यां उपवासः। पार्श्वनाथप्रतिमाग्रे याम्यदिशायां पद्मासनेनोपविश्य द्वादशसहस्रं जपेत्। पुरश्चरणो भवति। पछि त्रिसंध्यं अष्टशतं जपेत्। सप्तभिर्दिनै गंथ शतत्रयं गृह्णाति। उदकं सप्ताभिमंत्रितं अकाकोद्री षण्मासान् पिवेत्। सः कविर्भवति। सर्व शास्त्राणां वेत्ता भवति। सततं जप्तेन सर्वजनप्रियो भवति। मुद्रामंजलिं बद्धा जपेत्, चौरो बद्धो भवति, व्याघ्रादिभयो न भवति। स्मरणादेव देवात्प्रसिद्धिः वधो रुद्रो वा जपेत् प्रसीदति। राजकुलं वा प्रविशत् जपेत्, राजप्रियो भवति। अजारक्तेन मनुष्यकपाले माध्यं लिख्य अग्नौ तापयेत्, तत्क्षणात् शत्रुं जयति। दर्भपिष्टकेन पुत्तलिकां कृत्वा मदनकंटके (न) सर्वांगं विध इत्वा (विध्य) मध्ये खदिर लोहशिलाकया तापयेत् स वशी भवति। अलक्तेनांगुष्टं लिख्या अखंडमादर्शयो वां त्रिशूलहस्ता देवी अवतीर्णा पश्यति वा देविं वा। अन्येऽपि दारक दारि-काणां च सप्ताभिमंत्रीकृत्वा खड्गादर्शे दर्शयेत्, सर्वेपि पश्यन्ति यदेव नष्टं द्रव्यं, तत्रैव पश्यन्ति, येनाऽपि हृतं सोऽपि तत्रैव नीव व नीलवस्त्रां स्त्रियं पश्यति। रक्तांबरधरो वचबंधी स्त्री पुरुषयो यदि पश्यंति तदा सप्तरात्रेण मृत्युर्भवति। यत्किंचित् विधिविपरितं तत् सर्व दुःखाय।

पुष्पं छत्रं ध्वजं चैव, कलशं खड्गमेव च । पद्मं च बृषभं चैव, शुभान्येतानि लक्षयेत् ॥ १ ॥

सर्व कर्म करी ह्रीं लेखा नाम उदकं सदा वारान् दृष्टिं निवारयति । तर्जनिमेकविंशतिवारान् जप्त्वा शत्रुं तर्जयेत्, स्तंभो भवति । उदकपूर्णं घटं सप्ताभिमंत्रितं कृत्वा भाजनावेशं करोति, कुमारकुमारिकाणां वावेशं करोति । शौंडिकगृहात्सप्त तृणानि गृहित्वा अनेनाभिमंत्र्य चतुःपथे निखनेत्, सर्व नगरेषु शौंभिकाणामुरा विनश्यंति । काकमाचीकुसुमष्टरात्राभिमंत्रे कृत्वा सशाने निखनेत्, रात्रौ स्वपति कश्चित् बुध्यते सर्वेषां उद्धृते मोक्षः । यमुद्दिश्य काकपक्ष्यान् जुहोमिएतमुच्चाटयति, निंबपत्राणि जुहोमि यैः पिशाचेन गृह्यते । पुष्पमभिमंत्र्य ग्रहगृहीतस्य दर्शयेत्, पुष्पमाघ्राय गच्छन्ति । यंत्रशस्त्रं च स्तंभयति । आकाशात्पक्षिणं च पातयति । दंशमसकमत्कुणानां दंष्ट्रानां बाधं करोति । भस्मवालुकयाभिमंत्रितया नदीतीरेऽष्टशतं जपेत्, तां प्रक्षिप्य नदीं स्तंभयति । अन्नं सप्ताभिमंत्रितं भक्षयेत्, दिनेश्रीर्भवति । कंठमात्रमुदकमवतीर्याष्टसहस्रं जपेत्, कन्यामाकर्षयति । जलमध्ये रविबिंबं पश्यन् कणवीरशष्टकं जुहूयात्, वस्त्राणि लभते । यद्वर्णानि वस्त्राणि पुष्पाणि तद्वर्णानि वस्त्राणि । अर्धरात्रौ स्मशानं गत्वा स्वरुधिरेण रक्तानां निंब समिधा अष्टसहस्र जुहुयात् दह्यमानाऽसुरकन्या निर्गच्छति ताश्च बिलं प्रवेशयंति ताभिः सह क्रीडयेत् । न्यग्रोध अधो उपविश्य अष्टसहस्रं ८००० जपेत्, यक्षणी आयाति, स चात्मनः भक्तं दत्ते सपरिवारस्य । शंकर जटाजूटस्योपरि उपविष्टः त्रिसंध्यं अष्टशतं जपेत्, एकादि पणादि लभ्यते द्रव्यश्च तस्य कार्य अन्नं सप्ताभिमंत्रितं कृत्वा देव दक्षिणमूर्तौ स्थापयेत्, अक्षयं भवति । एषा विद्या कर्मकरी अप्रतिहतपरा क्रमानागान् स्तंभयति, सुरान् मोहयति,

वाक्यहारं करोति । योजनसातमपि गत्व कटिं सप्ताभिमंत्रितं कृत्वा श्रमं व्यपोहति।एषा विद्या सिध्यति जिनभक्तिपरायणस्य ॥
इति श्री ह्रीँ लेखाकल्पः समाप्तः ॥

॥ अथ मायाकल्पो लिख्यते—॥ शुक्लपक्ष ५–१०–१५ पूर्णातिथि बीजै, शुद्ध चंद्रबल, नैवेद्य पंचामृत फल वस्त्र इत्यादि लेइ, स्नानं ब्रह्मचर्य, एक भोज्य सुखडलेपन करी श्वेत धान्य मोक्षहेतु इत्यादि फलं। मायाबीज मंत्रः—" ॐ ह्रीँ नमः " मूलमंत्र लक्ष १००००० जपी जै । श्वेतरक्त पीत नील कृष्ण इत्यादि वस्त्र जपमाला धान्य पूजा तेहवुं करीयै । श्वेते मुक्ति, रक्ते वशी, पीते लक्ष्मी, नीले कृष्णे मारणं इत्यादि लक्ष जपायै दशांश होम करीयै तो राज्य पामै, रणे राजकुल दुर्ग संकट कामे १०८ जपी कणवीरपुष्प १०८, गुगलगोली १०८, होमीयै, कार्यसिद्धि पामै । पर्वणि ग्रहणे विशेष होम कीजै ॥ अथ पुरश्चरणविधिः—कुमारी कन्याने स्नान करावी भलां वस्त्र पहिावीजै । उभाणै पगां कोरे घडे पाणी भरी अणावीये । " ॐ प्रॉँ प्रौँ पूप्रः अमले विमले अशुचि शुचि भवामि स्वाहाः " स्नान कीजै । भूमिशुद्धिः—ॐ भूरिसि भूधात्रीरियं विश्वाधारे नमः इति शुद्धिः । रक्तकुसुंभा वस्त्र पहरी पाटला लोंगसहित शुद्ध यासै पाटै बेसियै, अंकाबले बेसियै। ताम्रपत्रोपरि ह्रीँकार पंचांगुलप्रमाण लिखावीए। कपूर अगर यक्ष कर्दम तिणै विलेपन करी सेवंत्री चंपा जाय सुखड तिणै १०८ वार पूजियै, नैवेद्य धूप दीप खेवींयै । सोपारी १ नालियर ५ ढोइयै, पछे होमविधि करीयै । टाणै महुंलि देइ ते उपर चउखूणीयो त्रिकोणीयो कुंड करीयै । अष्टदल करीयै खेजडीनी समिधं । ॐ वागच्धस्तनूनपावरद एहि एहि आगच्छ आगच्छ हं फट् इणे मंत्रे अग्नि थापीयै । खीर नालेर द्राख अगर सुखड केसर साकर लवंग घृत मेली प्रथम गुगल

कणेर घृतसु होमियै,

शान्तिकं पौष्टिकं चैव, वश्यमाकषर्णं तथा । उच्चाटनं स्तंभनं चैव, सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ १ ॥

इत्यादि चीजो सर्व होमियै । पछे विसर्जन मंत्र भणिये—" ॐ ह्रीं फुट् स्वस्थानं गम्यतां गम्यतां " इति मंत्र भणीये—

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतं । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि !, प्रसीद परमेश्वरि ! ॥ १ ॥

खमावीयै विसर्जन करीयै । यदा ह्रींकार प्रारंभीयै तदा भला गुरु होइ, अथवा सूरिमंत्रधारीनो हाथ मस्तके मूकावीयै । तेहनै खीरोदका गदीयाणा २ नी मुद्रा आपीयै । यथाशक्ति सारुं पूर्वोक्त विधिरो ध्यान मांडीयै । लक्ष एक जपीयै जाप, पछे सिद्ध हुवै ॥ इति श्री मायाबीज कल्पः श्रीखरतरगच्छाधीश भट्टारक श्री जिनप्रभसूरिविरचितः समाप्तः ॥श्री शुभं भवतु॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥

॥ श्री बृहद्ह्रींकार कल्पः ॥

॥ श्री सर्वज्ञाय नमः ॥ ॐ ह्रीं नमो जिणाणं । ॐ नमो अणंतोहिं जिणाणं । ॐ नमो अणंताणंतोहिजिणाणं । ॐ नमो सामन्नकेवलीणं । ॐ नमो भवत्थकेवलीणं । ॐ नमो अभवत्थकेवलीणं । ॐ नमो चउदसपुवीणं । ॐ नमो दस-पुवीणं । ॐ नमो एक्कारसंगीणं । एएसिं सवेसिं णमो । कायिकवाङ्मयो विधा पवज्जामि । समविधा पसिज्जउ । ॐ नमो भगवओ बाहुबलिस्स पण्हसमणस्स । ॐ वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सोमे सोमनसे महुरे इरिकाली किरिकाली गिरिकाली

पिरिकाली सिरिकाली हिरिकाली आयरियकाली । ॐ इरियाए किरियाए आयरियाए काली काली महाकाली, सिरि सिरिकाली, हिरिहिरिकाली, आयरिय आयरियकाली । ॐ ह्रीँ श्रीँ इरिमेरु किरिमेरु गिरिमेरु पिरिमेरु सिरिमेरु हिरिमेरु आयरिअमेरु। ह्रीँ नमः सर्वभयेभ्यो रक्षां ऋद्धिं वृद्धिं सौभाग्यं च कुरु कुरु स्वाहा । तथा च मंत्राधिराजस्तवे श्रीगुणशेखर सूरयः प्रोचुः—

न पार्श्वादपरो मंत्रो, न मंत्रादपरो विभुः । तद्ध्यादपरो नात्मा, ध्यायेन्नित्येकताननतां ॥ १ ॥

आत्मा पार्श्वात्मकः पार्श्वो, मंत्रात्पातौ तदात्मकौ एकद्वित्रि....प्येके--नेति तल्लयमावहेत् ॥ २ ॥

श्री जिनदत्तसूरिनी प्रभाते स्मरणा—पढम पणव माया मज्जारनमण अंतरा वन्नचियार जो समरइ, इण दिन सुभाव सवसिद्धि । तसु परिणय आवभूय पेयडायण गणडैर । सयल दुट्ठजणमन थरहरै । विज्जा एह समरंतह लोय भमहदीस पुहवी सर होय ॥ २ ॥

उप्पज्जए वा विगमए वा, धुवए वा जिनोदितां । त्रिपदी द्वादशांग्याश्च, मूलं मायेश्वरी मता ॥ १ ॥

आधारं तु गुदे चक्रं, स्वाधिष्ठानां नुवो फादि । मणिपूरँ तथा नाभौ, हृदि भुकमनांहतं ॥ २ ॥

कंठे विशुद्धिचक्रं च, आज्ञाचक्रं तु मस्तके । षडैतानि नु चक्राणि, परिज्ञेयानि योगिभिः ॥ ३ ॥

आधारादिकसू आज्ञा च लिंगे चक्र सूधा, ब्रह्मा विष्णु रुद्र इश्वर सदाशिव ए पांच पृथ्यादिकपरा स्वामी छै । आज्ञा-

चक्रमें मनरोवासो छे. ।

कुंडलिनि जंगाकृति--रेखां चितह शिवः शत्रुप्राणः । तच्छक्ति दीर्घकला, माया तद्वेष्टि तं जगद्वश्यं ॥ १ ॥

नाभौ हृदये कंठे, आज्ञाचक्रे च योनि मध्ये च । सिंदूरारुणमाया,--बीजध्यानात् जगद्वश्यं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ क्लूँ एकाक्षराय भगवति विश्वरुपाय सर्वयोगिविश्वयुगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकामप्रदाम नमः द्विजटी चतुर्जटी ॥

इति बृहद्ह्रीँकारकल्प आम्नायः समाप्तः
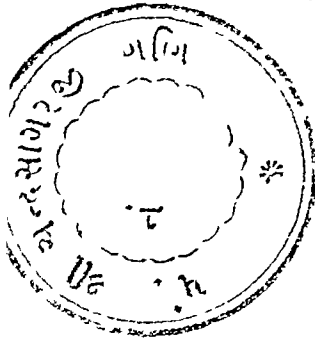
॥ णमो सिरिविजयमोहणसूरीणं ॥

॥ अथ वर्धमानविद्या कल्पः ॥

॥ श्रीजिनप्रभसूरिविरचित वर्धमान विद्या स्तवनम् ॥

॥ अर्हं ॥ आसि किलङ्कुत्तरसय, पयविन्नासो हुइज्ज पीढंमि। तत्तो उद्धरियाओ, वायगसिरिचंदसेणेणं १
चउवीसाइ जिणाणं, विज्जा एतासु जा चरमविज्जा । सा वद्धमाणविज्जा, भन्नइ तस्सा थुवं काउं २
पण परमिट्ठिपयाइं, चत्तारिय थुयपयाइ घित्तूणं । उवझाय कररन्ना, जा विहिया....अवयरे हिं ३
जा विविह मंडलुद्धार वाइणा साहुणा फल विसेसा। दिप्पंति संपयाओ, जे से जिणपवयणे बहवे ४
कल्लाणएसु पंचेसु वीरसामिणो कयविसेसतवविहिणो । आराहयंति रिसिणो, हत्थुतराइनखत्तेसु ५
उववासमयणतेरसि, दिणंमि अडाहियसहस्सजावेणं। बारससहस्सजावे, सिज्झइ जो वीरकल्लाणे ६
गरुडक्खए हिंसइवत्तणहं अडसयमीएहि पत्तेहिं । जविउण ते सत्तादिणे, पडोवरिं वीरबिंबे वा ७
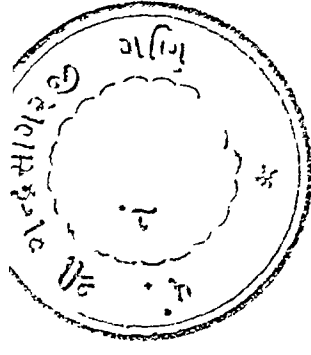
तदुभय चुन्नविमस्सिय,वासक्खेवे कयंमि खीरदुमे। जा सिज्झइ ता वासा सिरिखित्ता निरुवसग्गकरा ८
जं सिरिऊण सिरं निव पूइयसेहग्गमाइया तासिं। दीहाइ साइणिसमं, सुगइंच भवंतरे लहइ ॥ ९ ॥
अणुओग गणाणट्ठा, वयजोगपइट्ठ अत्थसत्थेसु। जीए वासक्खेवो, गुरुहिं किरइ अविग्घट्ठं ॥ १० ॥
अक्खयवासजलेहिं, जीए अरिसंभयं हरइ दोसं। भवियाण कुणइ ऋद्धिं, आरोग्गं तहय वसकरणं ११
जा वद्धमाणविज्जा, निरविज्जा भगवओ य सिज्झाओ। मे कम्मखयस्स परमोहेउ, इहलोइयफलाय १२
अक्खीण बीय कुट्ठे य विवाय नृजय सामिणिआ एसा। संपावइ भत्ताणं, विहिणा जविया इमा विज्जा १३
एयाइं विज्जाइं, पभावओ एण जस्स करि भव्वो। अणिगइ कल्लाणसुहं, निरथारपारगाहोउ ॥१४॥
पणवं हरियं तत्तं, रत्तं कणयप्पहे य बियपएसे। तं सुक्कज्झाणेणं, झायइ जो तस्स वरऋद्धी ॥१५॥
जविऊण इमं विज्जं, वारे इगवीस सम्ममवियन्नो। जो खलु पविसइ गामं कज्जं से सोहणं होइ ॥१६॥
इय वद्धमाणविज्जा, थवणं जो पढइ पइ पभाइ मणं। सो हवइ जिणप्पहमइ, मंगलकल्लाण आवासो १७

॥ इति वर्धमान विद्या स्तवनम् ॥

॥ वाचकचन्द्रसेनोद्धृतवर्धमानविद्याकल्पः ॥

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ उपाध्यायवाचनाचार्ययोरप्येवं देवतावसरे भूशुद्धिः १ । पंच शून्य करांगुलिन्यासः २ । स्नानं ३ । कल्मपदहनं ४ । हृच्छुद्धिः ५ । करद्वयांगुलयर्हदादिन्यासः ६ । हृत्कंठतालुभ्रूमध्य ब्रह्मरन्ध्र शून्यपंचकन्यासः ७ । कुरु कुल्ला रक्षा ८ । भूतसकलीक्रमोत्क्रम सामान्यार्घ्यान् विधाय ९ । मंडलोद्घाटनं पदनिश्चलीकरणं १० । गर्भादारभ्य मंडल-पूजां च कृत्वा आवाहनादि पंचकं स्वमुद्राभिः कुर्यात् । ॐ ह्रीँ नमोऽस्तु भगवन् वर्धमानस्वामिन् एह्येहि संवोषट् इत्यादि पंचस्वपि ज्ञेयं । अमृतमुद्रया स्नपयित्वा सजीवतापदनं, हृतकमलावतारणं, पूर्ववत् गंधादिग्रहणं, च सौभाग्यादि मुद्रा पंचकं दर्शयित्वा जाप १०८ । ॐ हरितवर्णं ललाटे, ह्रीँ रक्तवर्णं वश्यार्थे, वीर वीर इत्यादि बीजानि कनकपीतध्यानेन । शेषं श्वेत-ध्यानेति जप्यंते, अस्त्रमुद्रया क्षोभणं। श्लोकः । पाठः संहार मुद्रया, " ॐ ह्रीँ नमोऽस्तु भगवन् वर्धमान स्वामिन् पुनरत्रमागम-नाय स्वस्थानं गच्छ गच्छ " यः इति सुषुम्णया प्रत्यानयनं, मेरुलंघनं, भ्रूकंपं, ओष्ठचालनं, दंतविवृतिं वर्जयेत्, इति उपा-ध्यायवाचनाचार्यमहत्तरा प्रवर्तिनीनां नित्यकृत्यं । तत्र भूमिशुद्धिः ॐ भूरसि भूतधात्री सर्वभूतहिते भूमिशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहाः विसृष्ट्या वासक्षेपः १ । ॐ वास्तिप्र ॐ ह्रीँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रः अंगुष्टादिषु वामकरे न्यासः २ । ॐ अमले विमले सर्व तीर्थ जले पः पः पां पां वां वां अशुचिर्शुचिर्भवामि स्वाहाः " अंजलौ सर्वतीर्थोदकं संकल्प ललाटादारभ्य पादतलं यावत् स्नायात् ३ । ॐ विद्युत्फुलिंगे महाविद्ये सर्वं कल्मषं दह दह स्वाहाः " भुजमध्यस्पर्शस्त्रिः ४ । ॐ विमलाय विमलचित्ताय ज्वीँ क्ष्वीँ स्वाहा " हृच्छुद्धि वामहस्तः ५ । नमो अरिहंताणं अंगुष्टयोः, नमो सिद्धाणं तर्जन्योः, नमो आयरियाणं मध्यमयोः, नमो

उवज्झायाणं अनामिकयोः, नमो लोए सवसाहूणं कनिष्टयोः ६। ह्राँ हृदये, ह्रीँ कंठे, ह्रुँ तालुनि, ह्रैँ भ्रूमध्ये, ह्रौँ दशमद्वारे, वामकरेण सकृत् ।७। ॐ ललाटे, कुवामस्कंधे, रु वामपार्श्वे, कु वामचरणे, ले दक्षिणपादे, स्वा दक्षिणकुक्षौ, हा दक्षिणस्कंधे, ततो वैपरित्येन हास्वा ले कुरु कुरु ॐ वामकरेण ।८। क्षिप ॐ स्वाहा । क्षि पीतवर्णं पादयोः, ५ श्वेतवर्णं नाभौ, ॐ रक्तवर्णं हृदि, नीलवर्णं मुखे, हा ललाटे कृष्णवर्णं ततो वैपरित्येन स्वाहा ॐ पक्षि, इति पृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाशभूतैः सकलीकरणं ।९।

ॐ ॐ नमः सामान्यार्थः संवृतपटपूजा वासैः । "ॐ ह्रीँ नमोस्तु भगवन् वर्धमानस्वामिन् एह्येहिसंवौषट्" आवाहित्वा । १ । ॐ ह्रीँ नमोस्तु० तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन्या । २ । ॐ ह्रीँ नमोस्तु० मम सन्निहितो भव वषट् सन्निधान्या । ३ । ॐ ह्रीँ नमोऽस्तु पूजान्तं यावदत्रैव स्थातव्यं, सन्निरोधमुद्रया । ४ । ॐ ह्रीँ नमोस्तु० परेषामदृश्यो भव, अवगुंठिन्या । ५ । ॐ ह्रीँ नमोस्तु० गंधादिन् गृह्ण गृह्ण नमः पूजा । ६ ।

सोहग्गयपरमिट्ठी, पवयणसुरहिं कयंजलिं झाणे । मुद्दापंचगमेयं, कायवं सवकालंमि ॥ १ ॥

ततो जाप १०८,

ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतं । तत्सर्वं कृपया देव, क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥

पवित्री मूलस्थापितां गुष्टांजलिरावाहनमुद्रा १, सैवाधोमुखी स्थापनी २, उर्ध्वांगुष्टे मुष्टिमिलिते सन्निधानी ३, अभ्यन्तरांगुष्टे मुष्टिमिलिते सन्निरोधमुद्रा ४, मुष्टिं बध्वा प्रसारितर्जनिकामध्यमो परिनिवेशितां गुष्टाऽवगुंठिनी ५, ततश्छोटिका

विघ्नत्रासनार्थं । ६ ।

अथ तृतीयपीठसूचितो वज्रस्वामिकृतो वर्धमानविद्याकल्पः प्रकाश्यते—प्रथम देवतावसरविधिः ।

ॐ ह्रीँ अर्हं ह्रूं ह्रः ह्रौँ नमो वर्धमानस्वामिने स्वाहाः। ॐ वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जए विजए-जयंते अ पराजीए सवट्ठसिद्धे, निव्वुए महाणसे महाबले स्वाहा मंत्र विद्या च उभयोर्मिश्रितयोर्जापः १२०००, पूर्वसेवा ततः सिद्धो भवति। चतुर्थोपवासेन सौभाग्यमुद्रया जापः । मदनत्रयोदश्यामुपोष्य अक्षतैः पुष्पैर्वाजापः १००८ अप्पंथ इति वा साधना वार १०८ दिनं प्रति ध्यानं कर्तव्यं, बोटितमन्नं न भोक्तव्यं, उच्छिष्टेषु रक्षणीया, वासनिक्षेपः पटे सदा-कार्यः, सर्वकर्मकरोमंत्रः, क्षुल्लकक्षुल्लिकादिक्षोभनार्थं प्रतिपादादिषु स्थापना, प्रतिष्टोपस्थापन बासनिक्षेपादिक्रिया अनेन क्रियते ॥ १ ॥

अर्हं ॐ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः ह्रौँ वर्धनानस्वामिने स्वाहा ॐ वीरे वीरे इत्यादि भणनीया, पुस्तक समर्थनादिकं कार्यं । २ । तथा ह्रीँ अर्हं ॐ ह्रूँ ह्रः ह्रौँ नमो वर्धमानस्वामिने स्वाहा, ॐ वीरे वीरे विद्या भणनीया, इयति निवृत्तिकार्यादि कार्यं । ३ । ॐ ह्रीँ अर्हं ह्रूं ह्रः ह्रौँ वर्धमानस्वामिने स्वाहा ॐ वीरे वीरे इत्यादि भणनीया, जनाकर्षणविषये ध्यातव्यं । ४ । तथा ह्रीँ ॐ अर्हं ह्रं ह्रूँ ह्रूँ ह्रः ह्रौँ वर्धमानस्वामिने स्वाहा ॐ वीरे वीरे इत्यादि विद्या भणनीया, सौभाग्यार्थं ध्यातव्यं । ५ ।
ॐ ह्रीँ क्षुं वीराय स्वाहा ।

पंच परमिट्ठिमुद्दा, सुरहिसोहग्ग रुडगभनवआ य । मुग्गरक्खरा य सत्त य, एया अरक्खयपयाणंमि ॥१॥

अक्षताऽभिमंत्रणीया अगच्छता रोगिणां वा क्षेमं वश्यं च । ६ । ॐ अर्हं जये स्वाहा, जयादिकं क्रियते । ७ । ॐ ह्रीँ विजये विजयं मम कुरु कुरु स्वाहा, विजया विद्या । ८ । ॐ ह्रीँ अपराजितायै ॐ ह्रीँ अपराजितत्वं कुरु कुरु स्वाहा, अपराजिता विद्या । ९ । ॐ ह्रीँ जयंते स्वाहा, अनया जयादिकं । १० । विद्याचतुष्टयं, जयं स्वदेशे, विजयः परदेशे, अपराजितत्वं तीर्थश्रुतसंघप्रत्यनीकमध्ये वीरकल्याणकेषु साध्यते, इदं विद्याचतुष्टयं । ॐ नमो अरिहंताणं ह्राँ हृदये । ॐ नमो सिद्धाणं ह्रीँ शिरसि । ॐ नमो आयरियाणं ह्रूँ शिखायां । ॐ नमो उवज्झायाणं ह्रैँ कवचं । ॐ नमो सव्वससाहूणं ह्रः अस्त्रं आत्मरक्षां ॥ इति श्री वर्धमान विद्या संप्रदायः ॥

ॐ ह्रीँ अर्हं नमोजिणाणं, ॐ ह्रीँ नमो ओहिजिणाणं, ॐ ह्रीँ नमो सव्वोहिजिणाणं, ॐ ह्रीँ नमो परमोहिजिणाणं, (ॐ ह्रीँ नमो) अणंतोहिजिणाणं; ॐ ह्रीँ नमो कुट्ठबुद्धीणं, ॐ ह्रीँ नमो पयाणुसारीणं, ॐ ह्रीँ नमो संभिन्नसोइणं ॐ ह्रीँ नमो चउदसपूवीणं, ॐ ह्रीँ नमो अट्ठंगनिमित्तमहाकुसलाणं ॐ ह्रीँ नमो विउव्वणाइड्ढिपत्ताणं, ॐ ह्रीँ नमो विज्जाहराणं, ॐ ह्रीँ नमो पन्नसमणाणं, ॐ ह्रीँ नमो आगासगामीणं, । ॐ ह्रीँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रैँ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ ह्रीँ धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी स्वाहा ॥ द्वितीया वर्धमानविद्या ॥

पूर्व सेवा जाप १२००० शयनकाले हस्तपादौ प्रक्षाल्य कर्पूरश्रीखंडाभ्यां अंगं विलिप्य एकान्ते संस्तारके स्थित्वा वार १०८ कर्णे जपित्वा मौनिना कार्यं चिंतयित्वा शयनीयं, स्वप्ने शुभाशुभं दृश्यते ॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवओ अरहओ महइ

महावीर सामिस्स सिज्झउमे भगवइ महइ महाविज्जा, ॐ वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे महानंदणे सिद्धे सिद्धस्वरे सिद्धवीए अणहिये नायघोसे सारवन्नं घोससारे परमे परमसुहगे जए विजए जयंते अपराजिए सव्वन्नु परमपयत्ते स्वाहा ॥ तृतीया वर्धमानविद्या ॥

एयाए विज्जाए समणसमणी निक्खमण महिमं काउं क्रामेण १०८ जावेण सिद्धा हवइ । चतुर्थोपवासेन यंत्रस्याग्रे स्मरणीया, नित्थारपारगो हवइ । उट्ठावणयोगे वा निविग्घो उत्तमठ्ठं आराहेइ, । सूरो संगामे अपराजिओ हवइ । विद्याविधानकथितं सुहमसामिगणहरेण वर्धमानयंत्रः कथितः १२ ।

ॐ नमो अरिहंताणं । ॐ नमो सिद्धाणं । ॐ नमो आयरियाणं । ॐ नमो उवज्झायाणं । ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं । ॐ नमो आगासगामीणं । ॐ हः क्षः नमः श्रुविविद्या । ॐ नमो अरिहंताणं ह्रीँ हृदये इत्यादि, पाश्चात्य आत्मरक्षा अत्र स्थाने लिख्यते । ॐ ह्रीँ नमोस्तु भगवन् वर्धमानस्वामिन् ऐह्येहि संवोषट् आह्वानं १ । ॐ ह्रीँ नमोस्तु भगवन् वर्धमानस्वामिन् तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्वाहा, स्थापनं २। ॐ ह्रीँ नमोस्तु भगवन् वर्धमानस्वामिन् मम सन्निहितो भव वषट्, सन्निधानं ३ । ॐ ह्रीँ नमोस्तु भगवन् वर्धमानस्वामिन् पूजान्तं यावत् अत्र स्थातव्यं, सन्निरोधः ४ । ॐ ह्रीँ नमोस्तु भगवन् वर्धमानस्वामिन् परेषामदृश्यो भव, अवगुंठनं, छोटिका ५ ॥ ॐ ह्रीँ नमोस्तु भगवन् वर्धमानस्वामिन् गंधादीन् गृण्ह गृण्ह नमः, कामधेनु मुद्रा ६ । ततः पंचसु महावीर कल्याणेषु प्रत्येकं चतुर्थं कृत्वा सहस्रमेकं वीरप्रतिमाग्रे जपेत् महाविद्या या वार २१ । चंदनमभिमंत्र्य दक्षिणकर्ण खरंटयेत्, ततोऽष्टोत्तरशतं जपेत् । ॐ वीर इत्यादि महाविद्यां वार २१ चंदनभिमंत्र्य कर्णं

यामेतरं खरंटयेत्, ततोऽसोभरशमंत्रयंत्र जपेत्। उपदेशस्य विषये १३। ॐ नमो भगवओ महइ महावीर वद्धमाणसामिस्स सिज्झउ मे भगवइ महइ महाविद्या। वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाण (वीरे), श्रीपर्णीपत्रे प्रधान श्रीखंडेन...वीरे जए जयंतिए अपराजिए अणिहए मा चल चल वृद्धिर्देव ह्रीँ सः स्वाहाः शुचिभिः कृतोपवासे अष्टोत्तरं सहस्रं १००८ अखंड शवनिपट्टे गोशिर्षचंदनेन लिखित्वा पट्टे वा कुंकुमाद्यैर्लिखित्वा जातिकुसुमैः पूजयेत्। श्वेताक्षतैर्वा पूजयेत् विद्यामिमां, ततः सिद्धो भवति। वार सप्ताभिर्मंत्रितै वासैः श्रावकस्य शिरसि क्षिप्तैः तपोनिर्वाहो भवति, व्याख्याने विवादे जयो भवति नात्र संशयः ॥ १४ ॥

ॐ ह्रीँ नमो अरिहं० इत्यादि पद ५, ॐ नमो भगवओ अरहओ महावीरस्स सिज्झउ मे भगवइ महइ महाविद्या वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जए जयंते अपराजिए अणिहए मा चल चल सिद्धिदे ॐ ह्रीं स्वाहा ॥ एषा वर्द्धमानविद्या सर्वकार्यकरी अक्षर ३१ नंदि अक्षर ३४ सौभाग्यदं पदं अक्षर २ बीजपदं अक्षर २ समाप्तिपदं होमपदं वा ४ एवं अक्षर ६९ इति मंत्रशुद्धिः ॥

श्वेतध्यानेन कर्मक्षयः। शान्तौ च वीरे इत्यादि बीजपदानि। कनकपीत ध्यानेन सौभाग्यार्थं अतएव सौभाग्यविद्याम-ध्यात् श्री वज्रस्वामिना उद्धृतानि सौभाग्यपदानि पीतध्याने, ये ऋद्धये सौभाग्याय च ओँ। नीलध्यानेन ह्रीँ। रसाध्यानेन वशीकरणे स्वाहा। होम वास क्षेपे होमद्रव्याणि। महावीर कल्याणके उत्तराफाल्गुन्यां स्वातौ च उपवासं कृत्वा वर्धमानविद्यां सहस्रं [अष्टोत्तरं] १००८ जपेत् ततः सिध्यति। ततः शतपत्रिकापुष्प १०८, तंदूल १०८, उभयेषामपि जाप १०८ पृथक् पृथक् दिने २१ यावत्। ततो द्वयेषामपि चूर्णं कृत्वा आदौ क्षीरवृक्षे वासक्षेपः क्रियते। नतस्ते वासा यस्य शिरसि क्षिप्यंते

स वश्यो भवति । तथा वर्धमानविद्या ग्रामप्रवेशे वार २१ जपित्वा प्रवेष्टव्यं सर्वं भव्यं पूजालाभश्च भवति ॥ १५ ॥

ॐ ह्रीँ श्रीँ जीँ ड्रीँ कलिकुंडे कलिकुडदंडे देवदत्तस्यापातरक्षणाऽप्रतिहतचक्रे ॐ हाँ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे वद्ध-माणवीरे जयंते अपराजिए अणिहए स्वाहा वीर २१–१०८ सर्वकायेषु अभिमंत्र्याक्षता ग्रंथौ बध्यन्ते सर्वे प्रणता भवन्ति । आम्नायान्तरे—

ॐ नमो भगवओ अरहओ इत्यादि यावत् अणिहए मा चल चल वृद्धिदे ह्रॉ ह्रीँ स्वाहा । अस्मिन् आम्नाये श्लोकं २, अक्षर १५, चतुर्थेन साध्यते । व्रतदानोत्थापना गणियोग प्रतिष्ठोत्तमार्थप्रतिपत्त्यादि शुभ प्रयोजनेषु सप्तवार जपित गंध-निक्षेपे नित्थारपारगं होइ । पूयासक्कारादि होय । ॐ ह्रीँ अ सि आ उ सा नमः, त्रिकालं १०८ जापः। प्रतिदिनं उपाध्याय-वाचनाचार्ययोर्लघुमंत्रः । १६ । ॐ नमो भगवओ महइ महावीर वद्धमाणसामिस्स सिजझउ मे भगवइ महइ महावीर विद्या वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जये विजये जयंते अपराजिए स्वाहा । प्रातरवश्यं वार ८–२१–१०८ स्मृत्वा भुंजित । एतत्प्रभावात् सौभाग्यमापदांनाशो राज्यपूज्यः श्रीयांपतिः दीर्घायुः शाकिनीरक्षा सुगतिः स्याद् भवान्तरे ॥ १७ ॥

ॐ नमो चउवीसाए तित्थंकराणां, ॐ नमो तित्थस्स, ॐ नमो सुयदेवइ भगवइए, ॐ नमो सुयकेवलीणं, ॐ ॐ नमो सवसाहूणं ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, ॐ नमो अरहओ भगवओ सिज्झ उ मे भगवइ महइ महाविज्झा वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जयंते अजिए अ महावीरे अ पराजिए स्वाहा । वद्धमाणविद्या चउत्थं काउण जवियवा वार १०८

कार्यकाले वार २१–७। तथा गोरोचन चंदन केसर जातिफल कर्पूर कस्तूरिका एतत् चूर्णं क्रियते। अनुकूले चंद्रे प्रीतौ सौभाग्ये वा वा योगे अभिमंत्र्यते। तच्चूर्णं ग्रंथौ बध्वा ध्रियते वासाक्षतयोर्मध्ये। तच्चूर्णमध्यात् कणमेकं प्रक्षिप्यते यस्य शिरसि दीयते स वशीभवति नीरोगश्च। अथवा–वार १०८ अभिमंत्र्य तिलकं कृत्वा हृदये वा राजकुलादौ गम्यते, राजा अनुकूलो भवति कार्यकारी च नान्यथा।

ॐ नमो जिणाणं। ॐ नमो ओहिजिणाणं। ॐ नमो परमोहि जिणाणं। ॐ नमो सव्वोसहि जिणाणं। ॐ नमो अणंतोसहिजिणाणं (पाठांतरे) अणंतोहि जिणाणं। ॐ नमो केवलिजिणाणं। ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं। ॐ नमो बीयबुद्धीणं। ॐ नमो पयाणुसारीणं। ॐ नमो संभिन्नसोइणं। ॐ नमो उज्जुमइणं। ॐ नमो विउलमइणं। ॐ नमो महामइणं। ॐ नमो चउदसपुव्वीणं। ॐ नमो अट्ठंगमहानिमित्तकुसलाणं। ॐ नमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं। ॐ नमो आगासगामीणं। ॐ ह्रूँ ऍं श्रीँ ह्रीँ धृति कान्ति बुद्धि लक्ष्मी स्वाहा। अस्य मंत्रस्य क्रिया–स्वापकाले हस्तपादान् प्रक्षाल्य प्रधान श्री खंडेन कर्पूरमिश्रितेन आत्मशरीरे भूहरिकृत्वा एकान्ते संस्तारके उपविश्य कर्णौ वार १०८ जपित्वा मौनं कृत्वा कार्यं चिंतनीयं स्वप्तव्यं, ततः स्वप्ने शुभाशुभं कथयति, नात्र संदेहः कार्यः, किंतु भक्तिबहुमानेन सदा पूजनीया जातिपुष्पैः। सहस्र (द्वादश) १२००० जापः। कर्पूरागरु कस्तूरिका प्रभृतिभिर्भोगः इति प्राक्सेवा।

ॐ नमो वीरे वीरे विजये अतुलबलपराक्रमे भगवइ वीरे जये वीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जयंते अपराजिए ॐ इलि इलि मिलि किलि किलि पिरि पिरि सिरि सिरि ॐ वीरे विजयी महाविज्जा सव्वदुट्ठसंमोहणी सव्वदुट्ठसंखोहिणी सव्वदुट्ठघोहिणी

सव्वदुट्ठ जंभिणी थंभिणी अमुकं भंज भंज थंभ थंभ ठः ठः ठः । ॐ जयः वीरे विजयी स्वाहा, सदा ध्येया ७–२१। ॐ नमो भगवओ अरहओ सिज्झउ मे भगवइ महइ महाविज्ञा अहिआइए अपराजइएमहइए अपराजइए एणइए वद्धमाणइए जइए आछइए अपराजइए आह आ स्वाहा। उववासो चउविहारभत्ते हो जावोत्थ पूवसेवाए अट्ठोत्तरसहस्सं १००८ वार ३–७–२१। वासा अहिवासिज्ञंति

ॐ ऐं ह्रीं नमो वर्धमानस्वामिनी महाविद्ये मम शान्ति कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु, हृष्टिं कुरु कुरु, जीवरक्षां च कुरु कुरु, हूॅ क्ष्वं जंभे मोहे ह्रं फुट् ठः ठः ठः ठः ठः बलिं गृण्ह गृण्ह, धूपं गृण्ह गृण्ह, पुष्पान् गृण्ह गृण्ह, नैवेद्यं गृण्ह गृण्ह, नानाविधबलि गृण्ह गृण्ह सर्वरोगं हर हर ब्रॉं ब्रीँ ब्रू ब्रः वर्धमानस्वामिने स्वाहा, (इति) बृहद्वर्धमानविद्या।

ॐ नमो भगवओ महइ महाविद्या वीरस्स सिज्झसिज्झउ मे लहुं भवइ महइ महाविज्ञा वीरे सुवीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जये अपराजिते स्वाहा। उत्तराफाल्गुन्यां उपवासो, जातिकुसुमैः वर्धमानजिनस्याग्रेऽच्चर्या कृत्वा सहस्रं जपेत्। उत्तरकालं शुचिर्भूत्वा एकविंशति वारान् मुखमभिमंत्र्य यत्र व्रजेत् तत्र सर्वजन प्रियो भवति। १। कोष्ठागारे बीजमभि मंत्र्यानयैव विद्यया निक्षेपे वर्धते, परमुपोषितः स यथा किल नयसोत्तपवाहिय सियरासणि लवलिक्कमूलक यगद्भौसणवर पवईज्ञतो वि धणरासीननिट्ठेन् ॥ २ ॥ मुखं कर्णं चाभिमंत्र्य स्वपिति स्वप्ने शुभाशुभं कथयति ॥ ३ ॥ अनयात्मानमभिमंत्र्य सर्वान् भोजयति इत्यस्य पंच व्युघ्रयः। वादे द्यूते च पराजितो भवति, गौतमवाक्यं।

ॐ नमो वद्धमाण सिधुलेभयवदेवीरेस्समहावीर सुवीरे अजिते अपराजिते स्वाहा वर्धमानपुर, उत्तरातः पूर्वफाल्गुन्युत्तरा-

फाल्गुन्यामुपवासंकृत्वा जातिपुष्पै १००८ जाप, वार २१ कर्णमभिमंत्र्य सुप्यते रात्रौ जीवितमरणं कथयति। ॐ नमो भगवओ अरहओ सिज्झउ लहु भयवइ महइ महाविज्जा वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जयंते अपराजिए स्वाहा। महानिशिथे २४ छे अपि सर्व कार्ये तु मंडलविधिः पटादेवावसेयः ।

ॐ नमो महाबले महाविज्जे अप्रतिहतशासने महाक्षुद्रविनाशिनी दुष्टविद्रावणी ह्रीँ विजये स्वाहा । उपवासं कृत्वा श्री महावीर निर्वाण समये जातिकुसुमैरक्षतै वार १०८ इयं विद्या जप्ता साध्यते कार्यकाले युगफलं पत्रं वार १०८ अभिमंत्र्य दिनत्रयं दीयते, दौषनिग्रहः। उपशान्ते शान्तिप्रदे सर्वजगज्जीवहिते शान्तिकरे ॐ ह्रीँ सर्वभयं प्रशामय प्रशामय, भगवति शान्तिदेवते[1] अस्माकं सपरिवाराणां शान्तिं कुरु कुरु, ॐ ह्रॉ ह्रीँ हं शान्तये स्वाहा। उपवासं कृत्वा जातिपुष्पैरक्षतैर्वा पूर्वसेवा १००८, कार्ये १०८, शान्तिर्भवति ।

ऑँ ह्रॉ कर्णे विकर्णेश्वरि मम चिंतिते कार्ये शुभाशुभं कथय कथय स्वाहा। आदेशविषये ॥ इति श्री वर्धमानविद्याकल्पः ॥ सं० १८८१ मिति आसो शुदि ७ समाप्त. ॥

इति श्री वर्धमानाविद्याकल्पः समाप्तः

१. बृहत्सूरिमन्त्रकल्पे तु शांतिदेवताया पिरि संज्ञेति नाम दर्शितं ॥

॥ ॐ ॥

અમદાવાદ-આપડાની પોળ-નિવાસી

શેઠ મોહનલાલ છોટાલાલ તરફથી

તેમના ધર્મપત્ની

માણેકબાઇએ

નવપદજીની ઓળી

જ્ઞાન પંચમી, મૌન એકાદશી. વીશ-સ્થાનક અને રોહિણીના તપ કરેલા

卐 તે નિમિત્તે કરેલા ઉજમણામાં 卐

જ્ઞાનભક્તિ નિમિત્તે આ પુસ્તક સ્થાપન કરવામાં આવેલ છે વિક્રમ સં. ૧૯૮૫